योनित्यमच्युत पदाम्भुज युग्मरुक्म व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिंधोः रामानुजस्य चरणौ शरणम् प्रपद्ये।।

श्रीपादरामानुजाचार्य तनियन - श्री कूरेश स्वामी द्वारा विरचित श्लोक

मैं अपने आचार्य, श्रीपाद रामानुजाचार्य का अभिवंदन करता हूँ, जो श्री अच्युत भगवान के चरणकमलों के प्रति अत्यन्त लगाव के कारण अन्य सभी वस्तुओं को तिनके के समान तुच्छ मानते हैं, और जो ज्ञान, वैराग्य, भक्ति इत्यादि गुणों से संपन्न हैं, और जो कृपा के सागर हैं।

गुरु - परंपरा

कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्
क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।।

कहा गया है कि -ब्रह्मा के कल्प जितना जीवन जीने वाले देवगण बार-बार देवलोक में ही जन्म पाते हैं अर्थात् उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती जबकि भारतभूमि में जन्म लेने वाले कीट-पतंग भी गुरुजनों के चरण रज से मोक्ष पा जाते हैं।

यहां की धरती में भगवान का नाम है, गुरुओं के उपदेशों की गूंज से यहां मानवता की स्थापना होती है।

हमारे श्री सद्गुरुदेव भगवान (वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज) ने इसी पावन धरती पर पाड़ला (करौली, राजस्थान) नामक गांव में मनुष्य देह को धारण किया, जिन्होंने थोड़े ही समय में मानवता की राह पर लाखों लोगों को चलना सिखाया। मनुष्य स्वरूप को माध्यम बनाने वाले इन दिव्यात्मा ने बालपन से ही धार्मिक क्रियाकलापों में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अनेकानेक प्रकार की कठिन तपश्चर्याओं को कर श्री भगवान की कृपा प्राप्त की और धीरे-धीरे मानवता के संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्थान स्थापित कर दिया। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके शिष्यों के विशाल समूहों को देखने से मिलता है।

उनका दिव्य व्यक्तित्व बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं व देवगणों के रूप लावण्य को भी पीछे छोड़ता था। जिसपर उनकी एक नजर पड़ गई उसका जीवन धन्य हो गया, ऐसी तेजोमय दृष्टि।

उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को जाति-मजहब की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर केवल और केवल मानव होना सिखाया। उनके इस आंदोलन ने मानवता को नई राह और मजबूती प्रदान की। जातियों में बंटे समाज को एकसूत्र में बांधकर श्रीमन् नारायण की भक्ति में लगा दिया। ऐसी भक्ति में कि भक्त और भगवान के बीच कुछ भी शेष ना रह पाये।

बाबा के इस दिव्य तेज को संजोकर समस्त संसार को को अध्यात्म के तेज से आलोकित कर रहे वर्तमान पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के चरित्र को भी शब्दों में नहीं बांधा जा सकता अपितु उनके दिव्य साकार कार्य अवश्य ही लोगों को जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं।

अपने दिव्य आलोक से असंख्य जनों के हृदयों को प्रकाशित करने वाले, स्त्री-पुरूष को समान अवसर व स्थान समाज में दिलवाने वाले, असंख्य जनों को गृहस्थ जीवन में ही सन्यास का सुख प्रदान कराने वाले, केवल और केवल मानवता को एक धर्म व विचार स्थापित करने वाले, असंख्य भटकों को सही राह दिखाने वाले, आचार्य सम्प्रदाय को जन-जन तक पहुंचाने वाले, शुद्ध भक्ति मार्ग के प्रवर्तक व पवित्रता एवं सदाचार के बोधक श्री गुरु महाराज ही सब शिष्यों के लिए सर्वोच्च सत्ता हैं। वह भगवान का बोध कराने वाले होने से भी भगवान के पूर्व ही नाम लेने योग्य हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्यकृपा प्राप्त हुई और हम श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का आश्रय प्राप्त कर सके। हमसे पहले भी असंख्य ने यहां कृपा प्राप्त की और हमारे बाद भी असंख्य यहां कृपाएं प्राप्त करेंगे।

हमारे आचार्यश्री ऐसे आचार्य सम्प्रदाय के अभिन्न अंग हैं जिनके प्रवर्तक आचार्य भगवान् श्रीमन् नारायण ही हैं। श्री लक्ष्मी जी द्वारा जीवों के कल्याण की बात करने पर श्री भगवान ने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र, द्वय मंत्र आदि सभी मंत्रों का रहस्य बताया। श्री लक्ष्मी जी ने इन रहस्यों को श्री विष्वकसेन जी को प्रदान किया। उन्होंने श्री शठकोप स्वामी को यह बताया, मुनिजी से श्रीनाथ मुनिस्वामी जी को यह प्राप्त हुआ। तदुपरांत श्री पुण्डरीकाक्ष स्वामी व उनके बाद श्री राममिश्र स्वामी जी को यह मंत्र प्राप्त हुए। श्री राममिश्र स्वामी जी से श्री यामुनाचार्य स्वामी जी को व उनके उत्तराधिकार को श्री महापूर्ण स्वामी जी ने संभाला, जिन्होंने श्री रामानुज स्वामी जी को यह मंत्र प्रदान किये।

आज आचार्य सम्प्रदाय को भाष्यकार रामानुज स्वामी जी के ही नाम पर रामानुज सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। भाष्यकार रामानुज स्वामी जी ने श्रीभाष्य में लिखा है -

तर्काप्रतिष्ठानादपि।। 2.1.11

अर्थात् जो श्रुति सम्मत नहीं होता, उस तर्क की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। ऐसे में हम आपको जो गुरु परंपरा दिखा और बता रहे हैं वह श्रुति सम्मत भी है और प्रतिष्ठा योग्य भी है।

हमारे आचार्य एक श्रुतिसम्मत परंपरा में आए हैं, कोई मन्मना धर्म प्रतिष्ठित नहीं किए हैं। अतः यहां दिया जाने वाला संदेश प्रतिष्ठा योग्य है। ऐसा श्रीभाष्य द्वारा भी प्रतिष्ठित जान पड़ता है।

हमारे आचार्यश्री की वाणी में सभी सद्ग्रंथों का सरल भाषा में सार दे दिया गया है। सीधी और सरल भाषा में श्री गुरु महाराज कहते हैं कि उस (भगवान) पर विश्वास करके तो देखो, वो तुम्हारे सब दुख दूर कर देगा। मैं तुम्हारी वकालत करूंगा।

श्री महाराज द्वारा जीवमात्र के कल्याणार्थ ही श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना की। इसी आश्रम परिसर में एक विशाल श्री लक्ष्मी नारायण दिव्य धाम (मन्दिर) की स्थापना कर एक शक्तिपीठ का उदय भी किया गया है। श्रीगुरु महाराज कहते हैं कि यहां अनन्त काल तक असंख्य जनों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती ही रहेगी। आचार्य सम्प्रदाय की कीर्ति बढ़ाने वाले श्री सद्गुरुदेव भगवान ने सर्व कार्यों को सिद्ध करने वाली मां सिद्धदात्री की शक्तियों को यहां स्थापित किया है। हमारी आपश्री से प्रार्थना है कि अपने जीवन के अमूल्य समय में थोड़ा समय निकालकर श्री गुरु परंपरा में स्थापित इस दिव्य गंगा में मानसिक स्नान करने अवश्य ही आइए।

Sudershanalok_2022_Pages_1-32_Layout 1 13-Mar-22 11:25 AM Page 3

श्रीमते रामानुजाय नमः श्रीं श्रियै नमः श्री गुरवे नमः

सुदर्शनालोक

स्मारिका | 2022

आशीर्वाद प्रदाता
वैकुण्ठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संरक्षक
अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

परामर्श मण्डल
डी.सी. तंवर
जगदीश सोमानी

सम्पादक
शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

डिजाइनिंग एवं फोटो
नवल किशोर शर्मा

प्रकाशक
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट
बड़खल-सूरजकुंड मार्ग, सैक्टर-44, फरीदाबाद-121012 (हरियाणा) भारत
दूरभाष : 0129- 2419555, 9910907109
Follow us on: Facebook/Instagram/Twitter/YouTube - Shri Sidhdata Ashram
website : www.shrisidhdataashram.org - email: info@shrisidhdataashram.org

अनुक्रम.....

क्र.सं	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गुरु परंपरा		2
2.	सम्पादकीय	शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'	5
3.	संदेश		6-32
4.	राम न सकहिं नाम गुन गाइ	वै. श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज	33-36
5.	गुरु की महिमा भगवान से भी अधिक	श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी	37-40
7.	वेदों की आज्ञा	जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज	41
6.	हमारे धार्मिक अनुष्ठानों का मूल आधार : अनुराग	महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	42
8.	INTERFAITH HARMONY AN D THE GLOBAL SOCIETY	Dr. Karan Singh	43-45
9.	Spiritual Awakening	Maneeja Ahuja	46-47
10.	वसुधैव कुटुम्बकम्		48-49
11.	भौतिकवाद के स्याह अंधेरे के बीच अध्यात्मिकवाद की लौ है दिव्यधाम		50
12.	स्वस्थ शरीर ही धर्म को निबाह सकता है		51
13.	संस्कृत से ही अक्षुण्ण रहेगी संस्कृति		52-53
14.	पुस्तकें ज्ञान की केंद्र हैं		54
15.	मां अन्नपूर्णा की कृपा का केंद्र		55
16.	बाबा से जुड़ी स्मृतियों का प्रमुख केंद्र		56-57
17.	जनकल्याणकारी गतिविधियां		58-59
18.	महामारी में सेवा को मिला सम्मान		60
19.	जरूरतमंदों की सेवा		61
20.	गावो विश्वस्य मातरः		62
21.	गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा		63
22.	नवीकरणीय ऊर्जा ही भविष्य की ऊर्जा है		64-65
23.	श्री सिद्धदाता आश्रम का हरिद्वार कुंभ शिविर		66-73
24.	संतों के संग लाग रे...		74-82
25.	तत्वदर्शी विभूतियों का मिलन		83
26.	जहां जहां पड़े चरण संतन के		84-85
27.	खुशी मनाओ, मंगल बेला आई		86-87
28.	श्री गुरुजी ने खेली प्रेम की होली		88-89
29.	मर्यादा में मना पुरुषोत्तम भगवान का जन्मोत्सव		90
29.	वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर		91
30.	चतुर्दशम् ब्रह्मोत्सव		92-93
31.	यतिराज तुम्हारी जय हो, जय हो		94
32.	भक्तों के पालनहार श्री नृसिंह भगवान		95
33.	बाबा, आपकी कृपा हम पर बनी रहे		96-97
34.	जीवन के हर पल में गुरुदेव सहारा तेरा है		98-99
36.	सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय		100-101
35.	करुणामयी मां की द्वितीय पुण्यतिथि		102-103
36.	गुरुगीता प्रदान करने वाले शिवजी की याद		104-105
37.	आनन्दकन्द भगवान की जय		106-107
38.	सत्य विजय का पर्व एवं आद्या शक्ति का गुणगान		108-109
39.	कार्तिक मास में दान		110
40.	अद्वितीय दीपोत्सव		111-113
41.	परम कृपालु गोवर्धन महाराज की जय		114
	पावने सुरभि श्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोस्तुते		115
			116-117
42.	श्री सिद्धदाता आश्रम आने का मानचित्र		118
43.	श्री सिद्धदाता आश्रम - मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम का अनुक्रम		119
44.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम - समय सारणी		120

सम्पादकीय

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
संपादक - श्री सुदर्शन संदेश (मासिक) एवं सुदर्शनालोक (वार्षिकी)

सुदर्शनालोक का एक और अंक आपके हाथ

सुदर्शनालोक का एक और अंक आपके हाथ में सौंपते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। प्रयास है कि अच्छे लेखों के साथ श्री सिद्धदाता आश्रम एवं अनुषांगिक प्रोजेक्ट्स की पूरे वर्ष की गतिविधियों को संग्रहित कर सकें, ताकि सनद रहे।

मैं अपने संपादकीय के माध्यम से आपसे केवल यही अपील करना चाहता हूं कि सबसे पहले स्वयं को संभालिए। दूसरों को दोष देना बंद करिए। हममें से अधिकांश का कहना है कि हमारे जीवन में सबसे अधिक समस्याएं हमारे आस पास रहने वाले लोगों द्वारा पैदा की जाती हैं। आप लोगों से बात करेंगे तो पाएंगे कि उनकी अधिकांश समस्याओं का कारण अन्य लोग हैं। लेकिन आप जब थोड़ा भी ध्यान से देखेंगे पाएंगे कि हमारी समस्याओं के लिए कोई और नहीं बल्कि अधिकांश हम ही जिम्मेदार होते हैं, वह समस्याएं हमारे द्वारा ही स्वयं के लिए पोषित की जाती हैं और स्वयं के लिए पाली जाती हैं। लेकिन जब वह समस्याएं हमें डसने लगती हैं तो हम लगते हैं उनके लिए दूसरों को दोषी ठहराने में।

अब अध्यात्म में ही ले लीजिए। जब आप अध्यात्मिक ज्ञान के लिए किसी गुरू का चयन करते हैं तो थोड़ा सावधानी यहां भी बरतनी होगी।

कहा गया है कि

छाछ पीजो छानकर, गुरू कीजो जानकर।

अर्थात् छाछ को हमेशा छानकर ही पीना चाहिए। इसके पीछे कारण है कि छाछ में कई बार मलाई अथवा घी की मोटी परत भी अचानक आ जाती है जो गले में फंसकर दिक्कत पैदा कर सकती है। दूसरा, दूध के चक्कर में कोई सरीसृप जीव उसमें डूबकर मर सकता है। इसलिए छाछ को छान कर पीना चाहिए।

इसी प्रकार गुरू भी जानकर करना चाहिए। क्योंकि कुछ पता नहीं है कि कौन रूप बनाकर बैठा हो। आपको कौन सा मार्ग दिखला दे और कहां आपको भटका दे। गुरू रूप में बहरूपिये आजकल बड़ी संख्या में पाए जा रहे हैं। हमारे धर्मग्रंथों में लिखा गया है कि कलियुग में धर्म के नाम पर बहरूपिये आपको बहकाने भटकाने का काम करेंगे। इसलिए कहा गया है कि आपको गुरू भी जानकर करना है।

गुरू ऐसा होना चाहिए जो परंपरा में हो। जिसके अनुभव आपको पता हो। उसके बारे में अनुभवों को एकत्रित करो और तब गुरू करो।

हालांकि इसके बारे में हमारे सदगुरू वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने बड़ा स्पष्ट रूप से कहा है कि वेष का नाम गुरू अथवा साधु नहीं है। वह केवल पहचान है। जिसके आधार पर आप उन्हें सम्मान दे सकते हो लेकिन आपको उनकी पहचान करनी ही पड़ेगी।

यह एक अलग बात है कि हमारे यहां तो गुरू ही शिष्यों को स्वीकार करते रहे हैं। यह हमारी परंपरा में है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वह अपने शिष्यों को दुनिया के दूसरे छोरों से भी ढूंढ कर ले आते हैं। वह कहते हैं मैं अपने हृदय के तारों को श्री सिद्धदाता आश्रम में एकत्रित कर रहा हूं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि वेष का नाम साधू नहीं है बल्कि साधुता को वरण करने वाले ही वास्तव में साधू हैं। उनके अनुवर्ती गुरू महाराज जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज भी इसी कड़ी को आगे बढ़ा रहे हैं। गुरू जी रामानुज परंपरा में दीक्षित संत हैं। परंपरा कहती है कि रामानुज स्वामी ने भगवान से यह वचन लिया कि वह जिसे भी उनके मार्ग में लगाएंगे, उसे मुक्ति अवश्य ही मिलेगी। इस बात को भगवान ने सहर्ष स्वीकार कर अपने शेष जी को रामानुज स्वामी के रूप में धरती पर भेजा और आज यह उनके एक हजार वर्ष बाद भी परंपरा आम आदमी को भगवान की भक्ति मार्ग में प्रदत्त कर रही है और मुक्ति का साधन बना रही है।

अंत में मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जैसे हम छोटी छोटी चीजों, वस्तुओं को अपने लिए लेते समय जांच परखकर लेते हैं। तो जीवन के बड़े से बड़े निर्णय के लिए क्यों दूसरों पर निर्भर होने लगते हैं। हमारे जीवन का निर्णय और कोई क्यों करता है। हम किसी दूसरे के हाथ में अपने आपको क्यों दे देते हैं कि आओ हमारे साथ खेलो। उसके बाद हम जीवन भर उसके खिलाफ शिकायतें करते हैं।

मेरी प्रार्थना है कि आप अपने जीवन में किसी को भी जोड़ रहे हैं तो उसके बारे में खूब सोच समझकर निर्णय करें कि आगे और क्या क्या हो सकता है। बाद में दूसरे को दोष देने से आपकी गलती कम नहीं हो जाएगी। लेकिन थोड़ी सी सावधानी जीवन को गुलिस्तां बना सकती है, यदि चाहो तो। जय गुरुदेव!

Srimathe Narayanaya Namaha Jai Srimannarayana Srimathe Ramanujaya Namaha

SRI RAMANUJA SAHASRABDI

Mangalasasanams
H.H Tridandi Chinna Srimannarayana Ramanuja Jeeyar Swamiji

मङ्गलाशासन

प्रिय श्रीमान् पुरुषोत्तमाचार्य स्वामीजी महाराज!

प्रातःस्मरणीय अपने आचार्य के द्वारा प्रवर्तित सन्मार्ग - सत्सम्प्रदाय एवं विभिन्न आध्यात्मिक तथा सामाजिक सेवाओं का आप अपने परिजनों के साथ में सुचारु रूप से संचालन कर रहे हैं । पिताजी ने दीन दुःखियों के लिए बहुत उपकार किया है । वे आज भी तेजोमूर्ति के रूप हम सबलोगों के समक्ष विराजमान हैं । उन के उदार हृदय को समझकर आपलोग, निरन्तर सेवा कर रहे हैं । यह प्रशंसनीय विषय है ।

भगवद्रामानुजस्वामीजी की कृपा से आगे भी निर्विघ्न सेवाएँ चलती रहेंगी । संस्था की गति - विधियों की जानकारी कराते हुए विद्वज्जनों के मार्मिक लेखों के साथ प्रतिवर्ष स्मारिका का प्रकाशन करके आप अपने आचार्य के यश को चिरस्थायी बनाते हुए उन का मुखोल्लास कर रहे हैं । जिस से हमें अत्यन्त प्रसन्नता होरही है ।

पूज्य पिताश्री की उपकार - परम्परा को आप निरन्तरता प्रदान कर रहे हैं । यह पावन श्रृङ्खला, निरन्तर चलती रहेगी । आप सबलोगों को हम अनेकानेक मङ्गलाशासन कर रहे हैं ।

श्रीरामानुजसहस्राब्दी समारोह में आप अपने आत्मीयों के साथ में पधार कर कार्यक्रम की शोभ बडावें । यह हमारा आमन्त्रण है ।

अनेकानेक मङ्गलाशासन ।

जय श्रीमन्नारायण !

20-12-2021

Sriramanagar , Palamakula post, Shamshabad, R.R Dist, Telangana- 509325, INDIA
Cell : 9553549971/72 , 733 075 4646 email: sriramanujasahasrabdi2017@gmail.com
Website : statueofequality.org , chinnajeeyar.org

।। श्री ।।
।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ।। श्री वादिभीकर महागुरवे नमः ।।
श्री श्रीनिवास वेंकटेश्वर तिरुपतिबालाजी भगवान के दिव्यश्रीपादुका सेवक :-
श्री श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राजनारायणाचार्य जी
अध्यक्ष
श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्
भक्ति वाटिका, रामानुजाचार्य मार्ग, कसया रोड, देवरिया-274 001 (उ० प्र०) दूरभाष : (05568) 241479
ईमेल : bhaktivatika@gmail.com, वेब : www.bhaktivatika.com

क्रमांक ..... दिनांक : 20.12.2021

"मंगलाशासन पत्र"

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने नाम अनुरूप ही लोककल्याण के कार्यों में संलग्न है। आश्रक की स्थापना करने वाले सिद्धपुरूष श्री 1008 जगद्गुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के साथ मेरा व्यक्तिगत परिचय रहा है। बहुत सरल परंतु विद्वान वक्ता संत के रूप में उनकी विश्व में है। गद्दीनसीन श्री 1008 जगदगुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से जनहित के कार्यों में अहर्निश भाव से रत हैं। वह विद्या, विनय सम्पन्न सहज, मृदुभाषी एवं अपने पूर्व के आचार्य की तरह 'सिद्ध' हैं।

इस महिमाशाली संस्था द्वारा प्रकाशित हो रही **'सुदर्शनालोक' स्मारिका 2022** लोकोपकारी सिद्ध होगी। यही मंगलाशासन करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि स्मारिका भविष्य में भी सम्पूर्ण विश्व को आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देती रहे।

'इति शम्'

(जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज)

Sudershanalok_2022_Pages_1-32_Layout 1 13-Mar-22 11:25 AM Page 8

श्रियैनमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

अशर्फी भवन पीठाधीश्वर जगद्गुरू रामानुजाचार्य

स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज

श्री अशर्फी भवन, अयोध्या जी (उ.प्र.) 224123

अध्यक्ष एवं संचालक

- श्री मधुसूदन धर्म सेतु ट्रस्ट
  अयोध्या जी
- श्रीधर सेवा ट्रस्ट
  अयोध्या जी
- अयोध्या विद्या पीठ
  करमडांडा-बारून बाजार
  जिला अयोध्या (फैजाबाद) उ.प्र.
- श्री माधव भवन
  अयोध्या जी
- श्री अनादि ब्रह्म संस्कृत विद्यालय
  अयोध्या जी
- माधव वेद विद्यालय
  अयोध्या जी
- श्री मधुसूदन निःशुल्क छात्रावास
  अयोध्या जी
- निर्माणधीन वेंकटेश भवन
  अयोध्या जी
- श्री हनुमान मंदिर
  करमडांडा-अयोध्या
- श्री माधव गौशाला
  अयोध्या जी
- श्री शान्ती भवन
  रायगंज-अयोध्या
- श्री सांवरिया सेठ मंदिर
  बड़वानी, म.प्र.
- श्री वेंकटेश मन्दिर
  बेगमगंज (म.प्र.)
- रामजानकी मंदिर
  कहतरवा

क्रमांक 1112 दिनांक : 01.01.2022

"मंगलाशासन पत्र"

भगवत्, भागवत्, आचार्य, सन्त, गौ, ब्राह्मण, जनता जर्नादन की सेवा में तत्पर सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुण्ठवासी पूज्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की तपस्या साधना का फल प्रतिफल सिद्धदाता आश्रम एवं देश विदेश के अनेक संस्थान एवं प्रचुर वैष्णवता की परम्परा है, पूज्य स्वामी जी एवं हमारे पूज्य स्वामी जी के कई आत्मीय संस्मरण आज भी जीवंत हैं।

श्री स्वामी जी के सत्संकल्प को वर्तमान पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज बहुत ही कुशलता से सञ्चालन कर रहे हैं, यह पावन सिद्ध स्थान दर्शनीय है।

वार्षिकी सुदर्शनालोक में संकलित सुलेख, समाचार, संदेश, द्वारा आस्तिक जनों का मार्गदर्शन होगा, प्रकाशन समूह को मंगलाशासन।

श्रीधराचार्य

श्रीधराचार्य

सम्पर्क सूत्र : 9455002777, 8303594463, 9450942845
E-mail : ashartibhawanoffice@gmail.com

Sudershanalok_2022_Pages_1-32_Layout 1 13-Mar-22 11:25 AM Page 9

॥श्रीःकृपा॥

Jonapeethadhishwar Acharya Mahamandleshwar
Swami Avdheshanand Giri Ji Maharaj

HARIHAR ASHRAM

Pare Ka Mandir, Kankhal, Haridwar - 249 408 (Uttarakhand) India
Phone : + 91 1334 246974 Fax : +91 1334 246973

।। श्री दत्तात्रयो विजयते।।

शुभकामना सन्देश

प्रिय आत्मन, 26 दिसम्बर, 2021

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य पूज्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
सप्रेम हरि स्मरण ! हरि ॐ

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि **जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट** द्वारा **"सुदर्शनलोक–स्मारिका वर्ष 2022"** नये वार्षिक अंक का प्रकाशन हो रहा है।

आदिकाल से मनुष्य अपने जीवन की उन्नतता और सिद्धि हेतु विविध प्रकार के अन्वेषणों में तत्पर है। मनुष्य मन की इसी अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति ने संस्कारों की दिव्य परंपरा का सृजन किया जो उसके जीवन के उच्चतर लक्ष्यों की पूर्ति और आत्मोपलब्धि में सहायक है।

संस्कारों के समवेत जीवन जीना जीवन की उन्नति शीलता और उत्कृष्टता का परिचायक है। अत्यन्त प्राचीनकाल से ही हमारे जीवन के अनेक सरोकार संस्कारों से जुड़े हुए थे। जीव से ब्रह्म बनने की यात्रा में हमें भिन्न–भिन्न योनियों में भटकना पड़ता है और उसी भोग्य–भाग्य के अनुसार सुख और दुःख भोगने पड़ते हैं। अनेक जन्मों के पुरुषार्थ के बाद हमें आत्मशुद्धि के लिए मनुष्य जीवन प्राप्त होता है। अनेक जन्मों के संचित कर्म जनित दोषों से मुक्ति और अन्तःकरण में ब्रह्म तत्व और दैवीय तत्व की संस्थापना ही संस्कारों का मूल उद्देश्य हैं।

वर्तमान कालखण्ड संस्कृति–संस्कार एवं आध्यात्मिक मूल्यों के क्षरण का काल है, इस कठिन समय में भी आध्यात्मिक संस्था '**जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट**' अनेक पारमार्थिक कार्यों में संलग्न हैं। इस दृष्टि से आपके द्वारा जो दिव्य दैवीय कार्यों का संचालन और समायोजन हो रहा है, उसे देखकर मैं अत्यन्त हर्षित हूँ। आपके सत्प्रयासों को साधुवाद देता हूँ। **"सुदर्शनलोक–स्मारिका"** वर्ष 2022 पत्रिका के सम्पादक–मण्डल को अनेक शुभाशीष एवं मंगलकामनाएँ।

आचार्यपीठ
हरिहर आश्रम
कनखल, हरिद्वार

(स्वामी अवधेशानन्द गिरि)
जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर

President
Bharat Mata Mandir Samanvaya Sewa Trust
Bharat Mata Mandir,
Saptsarovar Marg,
Haridwar-249410 Uttarakhand, India
Phone: 01334- 260256, 326190
Fax: 01334- 260981
e-mail : bharat.samanvaya@yahoo.in

President
Hindu Dharma Acharya Sabha
The voice of Collective Consciousness

Founder:
Prabhu Premi Sangh Charitable Trust
Prabhu Prem Ashram, Jagadhari Road,
Ambala Cantt. 133 006 (Haryana) INDIA
Phones : +91 171 2699335
Fax : +91 171 2699367
website : www.prabhupremisangh.org
e-mail : pps.ambala@gmail.com,
prabhuprem@hotmail.com
/ AvdheshanandG
/ AvdheshanandSwami

शुभकामना संदेश

जानकर हर्ष हुआ कि श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा अपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक-2022 का इस वर्ष भी प्रकाशन हो रहा है। हमें विश्वास है कि पत्रिका की सार्थकता सनातन धरोहर के प्रचार व प्रसार में सिद्ध होगी। जिससे धर्मप्रेमी जन लाभ उठावेंगे।

वैकुण्ठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। यह स्थान अति पावन व चमत्कारिक है। वर्तमान में श्रद्धेय श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के पावन सानिध्य एवं कुशल मार्गदर्शन में श्री गुरु महाराज जी की शिक्षाओं को असंख्य भक्तगणों तक पहुचाकर उन्हें मोक्ष के सरल मार्ग पर ले जा रहे हैं।

इस आलौकिक कार्य को निष्पादित करने के लिये मैं सभी आश्रम बंधुओं को मंगलाशासन करता हूँ।

शुभमस्तु!

श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम,
श्री रमणरेती धाम, महावन 281305 (गोकुल), जिला-मथुरा दूरभाष : (05661) 272225, 272065

श्री कृष्ण कृपा

म.मं. गीता मनीषी
स्वामी श्री ज्ञानानन्द
जी महाराज

शुभकामना संदेश

भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति निःसंदेह विश्व की अन्यतम संस्कृति है। मानसिक शांति से लेकर विश्व बन्धुत्व तक की दिव्यता यदि कहीं अनुभव की जा सकती है तो वह केवल ओर केवल भारतीय मनीषा में। अपनी परंपराओं की यह श्रेष्ठता-व्यापकता आस्था के साथ जन जन तक व्यवहारिक प्रेरणा के रूप में पहुंचे- हमारे मनस्वी, तपस्वी पूज्य संतों ने ऐसे बहुविध प्रयास किये हैं।

श्री सिद्धदाता आश्रम को केंद्र रुप में स्थापित कर जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से पूज्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी जिस प्रचार और सेवा सद्भावना का विस्तार कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। अपने पूज्य सद्गुरुदेव की पावन प्रेरक स्मृतियों को सजाये हुये संस्थाओं के उद्देश्यों को और व्यापकता देने हेतु प्रकाशित सुदर्शनालोक स्मारिका-2022 के सफल सार्थक प्रयास के लिय हमारी हार्दिक शुभकामनायें।

शभेच्छु
(गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द)

श्री कृष्ण कृपा धाम
परिक्रमा मार्ग, श्रीवृन्दावन (मथुरा) 281121 (8899363611/22)
Email: gieogita@gmail.com, Website : gieogita.org

ओ३म्
पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक
S.No. : .....

दिनांक : 31.12.2021

शुभकामना संदेश

ऋषि संस्कृति, धर्म, अध्यात्म पुरातनकाल से भारत की पहचान रहे हैं। पिछले एक लम्बे कालखण्ड में भारत के पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण इन भारतीय मूल्यों का अवमूल्यन हुआ है। पतंजलि योगपीठ ऋषि संस्कृति, प्राचीन भारतीय संस्कृति विरासत व सनातन धर्म की पताका पुनः पूरे विश्व में फहराने के प्रति संकल्पित है तथा इस उद्देश्य से व्यापक स्तर पर कार्यरत है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट भी श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम तथा श्री सिद्धदाता आश्रम के माध्यम से सनातन धर्म की पुनर्स्थापना के लिये कार्य कर रहा है साथ ही साथ गौ-संवर्द्धन, अध्यात्म, संस्कृत के प्रचार-प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं, वृक्षारोपण, स्वच्छता आन्दोलन आदि में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट अपनी वार्षिक स्मारिका '**सुदर्शनालोक-2022**' का प्रकाशन कर रहा है। आशा है कि सुदर्शनालोक समाज में धर्म, अध्यात्म, कला, साहित्य, संस्कृति व सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने में अग्रणी भूमिका निभाएगी। वार्षिक स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी मंगलकामनाएं।

(स्वामी रामदेव)
अध्यक्ष

सम्पर्क कार्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)
Contact Office : Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
Tel. : 01334-240008, 246737, 248888 Fax : 01334-244805, 240664 E-mail : divyayoga@rediffmail.com, info@divyayoga.com Web : www.divyayoga.com

सतपाल महाराज
मंत्री
SATPAL MAHARAJ
Minister

उत्तराखण्ड सरकार

पर्यटन, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई, लघु सिंचाई, संस्कृति, जलागम प्रबंधन, तीर्थाटन एवं धार्मिक मेले, बाढ़ नियंत्रण, भारत-नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनायें
उत्तराखण्ड सरकार
Tourism, Public Works Department, Irrigation, Minor Irrigation, Culture, Watershed Management, Pilgrimage and Religious Fairs, Flood Control, India-Nepal-Uttarakhand River Projects
Goverment of Uttarakhand

पत्रांक –7631 मंत्री/29–संदेश/2021
दिनांक 10, दिसम्बर, 2021

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि बात है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट आपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक-2022 का प्रकाशन करने जा रहा है। स्मारिका का मुख्य उद्देश्य जन समान्य में धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, कला साहित्य का प्रचार प्रसार करना है। स्मारिका में संतों, धर्माचार्यों एवं विद्वानों और जनसेवकों के संदेश एवं विचारों का संकलन किया जा रहा है जिससे जन सामान्य लाभान्वित हों। मुझे विश्वास है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित स्मारिका में प्रकाशित संकलन जनमानस को उपयोगी सूचनाएं प्रदान करने वाला सहायक सिद्ध होगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करते हुए जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

भवनिष्ठ

(सतपाल महाराज)

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

कार्यालय - विधान सभा भवन, देहरादून दूरभाष : (0135) 2666377 फैक्स : (0135) 2666380 आवास - 17, सुभाष रोड़, देहरादून, दूरभाष : 9810990009
ई-मेल : writeto@satpalmaharaj.in वेबसाइट : www.satpalmaharaj.in

॥ गायत्री विजयतेतराम् ॥

सम्पर्क सूत्र : 9463600003

श्री पंच अग्नि अखाड़ा

(अधिनियम 21 सन् 1860 अतर्गत पंजीकृत संख्या 1166/65-66)

श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव

मुख्य केन्द्र -
11/30 सी, नया महादेव, राजघाट,
वाराणसी - 221001 (उत्तर प्रदेश)

क्रमांक.....

दिनांक.....

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2022'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक,सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर अभिभूत हूं और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क शिक्षा के साथ आवासीय सुविधाएं भी दी जाती हैं। आश्रम द्वारा संचालित पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी असमर्थजनों को सहर्ष प्रदान की जाती हैं।

संस्था निसंदेह प्रशंसा की पात्र है।

मैं समझता हूं कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

मैं संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2021** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय
श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव :
श्री पंच अग्नि अखाड़ा

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

दिनांक : 23.12.2021

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट, फरीदाबाद (हरियाणा) द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सुदर्शनालोक-2022 नामक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

मैं स्मारिका से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(Rajnath Singh)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

किरेन रीजीजू
KIREN RIJIJU

सत्यमेव जयते

मंत्री
विधि एवं न्याय
भारत सरकार
MINISTER
LAW AND JUSTICE
GOVERNMENT OF INDIA

Dated, the 30 December,2021

MESSAGE

I am glad to know that the Janhit Sewa Charitable Trust, Faridabad (Hariyana) is bringing out the annual issue of "SUDARSHANALOK - SMARIKA VARSH,2022".

I extend my warm greetings and felicitations to all those associated with the Janhit Sewa Charitable Trust.

I wish the publication all success.

(Kiren Rijiju)

402, 'ए' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7557, 2338 6976, 2338 6974] फैक्स : +91-11-2338 4241
402 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001, Tel. : +91-11-2338 7557, 2338 6676, 2338 6974 Fax : +91-11-2338 4241

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra
Governor, Rajasthan

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2022'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

सेवा को सर्वोपरि रखते हुये बगैर किसी प्रतिफल के कार्य करना ही मानव जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। लोकोपकार के कार्य ही मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते हैं। यह सुखद है कि आपके ट्रस्ट द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार, गौपालन, पौधारोपण, स्वच्छता, पर्यावरण आदि क्षेत्रों के साथ ही संस्कृत-संस्कृति, वेद-वेदांगों के अध्ययन-अध्यापन और अध्यात्म के जरिये विश्व शांति और सद्भाव के प्रयास किए जा रहे हैं। ट्रस्ट द्वारा संचालित आश्रम और सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।

मेरी कामना है कि भारतीय संस्कृति और मानव कल्याण के लिये आपके प्रयास भाविष्य में भी इसी तरह से प्रभावी रुप में क्रियान्वित हों। आपके द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिकी में सेवा और संकल्प के आपके कार्यों के साथ ही पाठकोपयोगी सामग्री होगी, ऐसा विश्वास है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट की गतिविधियों के अंतर्गत जन-जन के कल्याण हेतु किये जा रहे आपके कार्यों और प्रकाश्य वार्षिकी सुदर्शनालोक-2022 के लिये मेरी स्वस्तिकामना है।

(कलराज मिश्र)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर–302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141–2228716–19, 2228611–12, 2228722

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।

CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 09.12.2021

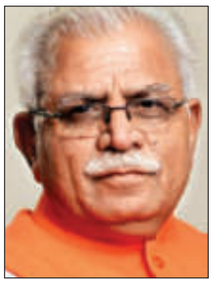

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका का नया अंक **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2022'** का प्रकाशन कर रहा है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि हमारे देश और समाज के विकास एवं उत्थान में अध्यात्मिक संत-मुनियों का विशेष योगदान रहा है। इन दिव्यात्माओं द्वारा प्रकाशित किए गए जीवन के उच्चादर्शों ने मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। ऐसे में जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य जी के सिद्धांतों और आदर्शों का अनुसरण करते हुये लोगों, विशेषकर युवा पीढ़ी को धार्मिक परम्पराओं, लोक मान्यताओं और संस्कृति से जोड़ने का कार्य कर रहा है वह अत्यन्त सराहनीय है।

आशा है कि स्मारिका में प्रकाशित विभिन्न शिक्षाविदों तथा धर्म-गुरुओं के लेखों एवं विचारों से लोग, विशेषकर युवा अपनी संस्कृति को और बेहतर ढंग से समझ सकेंगे तथा साथ ही उनमें आपसी भाईचारे एवं सौहार्द की भावना सुदृढ़ होगी।

मैं सुदर्शनालोक-2022 के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

मनोहर लाल

(मनोहर लाल)

Office : 4th Floor, Haryana Civil Secretariat, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749396, 0172-2740995 (Fax)
Resi. : H.No. 1, Sector-3, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749394, 0172-2740596 (Fax)
email : cmharyana@nic.in

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम.// सन्देश / औएसडीएफ / 2021
जयपुर, 13 दिसम्बर, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की संचालक जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद, हरियाणा द्वारा स्मारिका वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2022'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन, वेद-वेदांग एवं संस्कृत में उच्च शिक्षा, कला, साहित्य, गोपालन, पर्यावरण, स्वास्थ्य सेवाओं आदि के क्षेत्र में सक्रिय संस्था द्वारा स्मारिका का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। इससे संस्था कि विविध सेवाओं से अन्य सेवार्थीजन को भी प्रेरणा मिलती है।

आशा है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट की वार्षिकी सुदर्शनालोक-2022 स्मारिका की सामग्री अध्यात्म आस्था और समाज सेवा की भावना को व्यापक बनाने के साथ सामाजिक समरसता का संचार करने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण एवं नमन करते हुए स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

अशोक गहलोत

कृष्ण पाल गुर्जर
KRISHAN PAL GURJAR

सत्यमेव जयते

केंद्रीय राज्य मंत्री,
भारी उद्योग और ऊर्जा मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
UNION MINISTER OF STATE FOR
HEAVY INDUSTRIES AND POWER
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष-2022 नामक पुस्तिका का प्रकाशन कर रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट मानव कल्याण के लिए कार्य कर रहा है। स्मारिका के माध्यम से सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक व साहित्य प्रदान करना ट्रस्ट का एक सराहनीय प्रयास है। इससे विश्व में सामाजिक सद्भाव स्थापित होगा। इस प्रकाशन में धार्मिक गुरुओं, सुप्रसिद्ध शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के विचार और लेख शामिल होने से आमजन को लाभ होगा।

स्मारिका के प्रकाशन से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी, जिससे राष्ट्र और समाज में एकता व भाईचारे का संदेश जाएगा। आशा है कि यह स्मारिका समाज में और अधिक शान्ति सद्भाव व भाईचारा बढ़ाने में सार्थक सिद्ध होगी।

मैं जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद को स्मारिका प्रकाशित करने पर बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ और ट्रस्ट के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

जय हिंद,

(कृष्णपाल गुर्जर)

36, उद्योग भवन, नई दिल्ली–110011 • फोन : 23062676/78, 23061593, फैक्स : 23060584
36, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 • Phone : 23062676/78, 23061593, Fax : 23060584

कैलाश चौधरी
KAILASH CHOUDHARY

कृषि एवं किसान कल्याण
राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR AGRICULTURE
& FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

Message

I am happy to know that Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out the next annual issue of **SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2022.**

I have been informed that **SUDARSHANALOK**- Smarika is aimed to provide socio-academic religious literature in the large interest of the human mankind and to ensure harmony in the world as this publication will consist of views and articles from renowned academicians, philanthropist, social workers and religious Gurus.

I wish Janhit Sewa Charitable Trust all the best for their future endeavours and hope that they will continue to do their good work in the service of people at large.

(Kailash Choudhary)

Office : 199Q, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001. Tel. : +91-11-23782343, 23388165 Fax : 23074190

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा,
एम. एल. ए.,
नेता प्रतिपक्ष,
नेता कांग्रेस विधायक दल,
हरियाणा विधान सभा एवं
पूर्व मुख्य मन्त्री, हरियाणा

BHUPINDER SINGH HOODA,
M.L.A.
Leader of Opposition,
Leader of Congress Legislature Party,
Haryana Vidhan Sabha and
Former Chief Minister, Haryana.

D.O. No.
Secy/Ex-CMH/2021/460
Kothi No. : 70, Sector-7,
Chandigarh.
Ph. : 0172-2794473

Dated 10-12-2021

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका सुदर्शनालोक-2022 का प्रकाशन किया जा रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा मानव कल्याण हेतू श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री नारायण गौशाला, संस्कृति महाविद्यालय आदि के माध्यमों से भजन-सत्संग, आध्यात्मिक प्रवचन, हवन-यज्ञ, संस्कृत का प्रचार-प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं, गोपालन, पौधारोपण एवं नित्य निशुल्क भोजन सेवा आदि का संचालन एक सराहनीय कदम है।

स्मारिका के माध्यम से जनता के बीच धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, कला, साहित्य का प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्र में मानवता के कल्याण तथा संसार में शांति व भाईचारा बढ़ाने के लये लोगों को साहित्य सामग्री प्रदान करना ही ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य रहा है। मुझे आशा है कि ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका सुदर्शनालोक में समायोजित संतों, धर्माचार्यों एवं विद्वानों और जनसेवकों के संदेश पाठकों को समाज सेवा के लिये प्रेरित करेंगे।

मैं, शुभकामनाएं भेजत हुये स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(भूपेन्द्र सिंह हुड्डा)

Delhi : #15, Talkatora Road, New Delhi - 11001, Ph.: +91-11-23311758, 23312326.
Rohtak : Model Town, Delhi Road, Rohtak (Haryana) - 124001, Ph.: +91-1262-282283.
Chandigarh : Kothi No. 70, Sector-7, Chandigarh - Ph.: 0172-2794473

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

13, सिविल लाइन्स
जयपुर (राज.)

सन्देश

संदेश

हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा इस वर्ष भी ट्रस्ट का वार्षिक संस्करण **'सुदर्शनालोक – स्मारिका वर्ष 2022'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस प्रकार का साहित्य समाज में सेतु का काम करते हैं। जिसका उद्देश्य समाज को सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराने के साथ सम्पूर्ण समाज में सद्भावना कायम करना है।

इस स्मारिका में प्रकाशित धर्मगुरुओं, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के विचार इस स्मारिका को बहुउपयोगी बनाने में सहायक होंगे।

'सदुर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2022' के की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

वसुन्धरा राजे

(वसुंधरा राजे)

अरुण सिंह
संसद सदस्य
(राज्य सभा)

सत्यमेव जयते

ARUN SINGH
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित स्मारिका सुदर्शनालोक-2022 का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार के जन-कल्याणकारी एवं धर्मार्थ कार्य अत्यन्त ही प्रसंशनीय हैं। वास्तव में आदिकाल से भारत की भूमि पर साधु-सन्तों एवं मनीषियों ने सेवा परमो धर्म के मंत्र का अनुशरण करते हुए अनवरत् स्वयं को प्राणी मात्र एवं मानव मात्र के कल्याण के लिए समर्पित किया और इसी सेवा भाव ने हमारी संस्कृति को अन्यों से इतर एवं विशेष बनाया है।

मुझे हर्ष है कि पूज्यपाद जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी सुदर्शनाचार्य जी द्वारा संस्थापित श्री सिद्धदाता आश्रम जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट इसी महान परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना अंशदान दे रहा है।

अतः मैं इस संस्था की प्रगति और स्मारिका सुदर्शनालोक-2022 के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

(अरूण सिंह)

कार्यालयः 6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 दूरभाषः 011-23500000
Off.: 6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110002 Ph : 011-23500000
निवासः 6, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23310386
Res.: 6, Gurudwara Rakabganj Road, New Delhi-110001 Ph.: 011-23310386
ईमेलः arunsinghbjp@gmail.com www.facebook.com/arunsinghbjp twitter.com/arunsinghbjp

Deepender Singh Hooda
Member of Parliament (Rajya Sabha)

15, Talkatora Road, New Delhi-110001
Tel : +91 11 23312326, 23311758,
23093805 e-mail office@deepender.in

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि पूर्व के वर्षों की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट आपनी वार्षिक स्मारिका सुदर्शनलोक-2022 का प्रकाशन कर रहा है। स्मारिका के माध्यम से आमजन में धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, विद्वानों एवं जनसेवकों के लोकोपकारी विचारों का संकलन निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा।

ट्रस्ट द्वारा जनकल्याण के लिये किये जा रहे कार्यों के लिये मैं संस्था के प्रत्येक सदस्य को साधुवाद देता हूँ तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभेच्छाओं के साथ।

(दीपेन्द्र सिंह हुड्डा)

डॉ हर्ष वर्धन
सांसद- लोकसभा चाँदनी चौक, दिल्ली
Dr Harsh Vardhan
Member of Parliament - Lok Sabha
Chandni Chowk, Delhi

सत्यमेव जयते

पूर्व केंद्रीय मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन
भारत सरकार
पूर्व चेयरमैन, कार्यकारी बोर्ड, विश्व स्वास्थ्य संगठन
Former Union Minister, Health & Family Welfare
Science & Technology and Earth Sciences
Environment, Forest and Climate Change
Govt. of India
Former Chairman, Executive Board,
World Health Organization

15 दिसंबर, 2021

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि विगत् वर्षों की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट अपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक 2022 का प्रकाशन कर रहा है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत युगों के बीत जाने के बाद भी जीवित है क्योंकि इसके केन्द्र में हमारे ऋषियों-महर्षियों, संतों तथा महापुरुषों की तपस्या एवं साधना के उपरांत प्रस्फुटित हुई आध्यात्मिक चेतना समाहित है। उनके द्वारा अन्वेषित संस्कार, ज्ञान, दर्शन और जीवन मूल्य इसमें निरंतर प्रवाहित हो रहे हैं। इसीलिए भारत की संस्कृति में हमेशा जीवंतता का अनुभव होता है।

ट्रस्ट अपने विविध सेवा प्रकल्पों के माध्यम से लोक उपकार और समाज के उत्थान का कार्य कर रहा है। निःसंदेह इससे समाज लाभान्वित हो रहा है। समाज में भारी संख्या में लोग हैं जो अपनी असमर्थतावश देश की मुख्य धारा से वंचित हैं। ऐसे में ट्रस्ट का परोपकारी प्रयास एक सेतु सिद्ध होता है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिकी सुदर्शनालोक 2022 अपने प्रयोजन में अपूर्व सफलता प्राप्त करे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. हर्ष वर्धन)

चेयरमैन,
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट
सूरजकुंड रोड, सेक्टर-44,
फरीदाबाद-121012

कार्यालय एवं निवास: 8, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली-110011 Office & Residence: 8, Tees January Marg, New Delhi-110011
Tel.: (R) +91-11-23794649 • E-mail : drhrshvardhan@gmail.com

N N Vohra
President

INDIA INTERNATIONAL CENTRE

2nd February, 2022

Dear Swamiji,

Thank you for sending me a copy of *"Sudarshanalok*, 2020", a publication of Janhit Sewa Charitable Trust . It is creditable that the Trust, under your leadership, has been rendering valuable service in varied areas, spreading from promoting Indian culture and philosophy to preservation of the environment. I laud your continuing endeavours.

Thank you for your invitation to visit your Ashram. I hope this shall become possible in the coming time, after the pandemic ends.

With my best wishes for the success of all your initiatives.

Yours sincerely,

(N.N. Vohra)

Swami Shri Purushottamacharya Ji Maharaj
Chairman
Janhit Sewa Charitable Trust
Surajkund Road
Sector 44, Faridabad – 121 012
Haryanna

40, Max Mueller Marg, New Delhi -110 003
Telephones : 2461-7936 & 2460-9401 Fax : 91-11-2463-4224
E-mail : president@iicdelhi.in, nnvohra@nic.in

महेन्द्र पाण्डेय
राष्ट्रीय कार्यालय सचिव

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि फरीदाबाद में **'जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट'** द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2022'** का प्रकाशन कराने जा रही है।

आपने **'श्री सिद्धदाता आश्रम'** द्वारा ब्रह्मलीन स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की **'आत्ममोक्षार्थम जगत हिताय च'** की अवधारणा से प्रेरणा लेकर मानव कल्याण के लिए भारतीय संस्कृति के आधारभूत विविध कार्यक्रमों को अपना उद्देश्य बनाया है और इस क्रम में विविध शैक्षिक, धार्मिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन निश्चय ही आपकी संस्था का सराहनीय प्रयास है। इस संक्रांति काल में जबकि संपूर्ण विश्व में सनातन मानवीय मूल्यों सत्य, प्रेम, अहिंसा और विश्वबंधुत्व की पुनः स्थापना अत्यावश्यक हो गई है ऐसी ही समाज सेवी संस्थाएं दिशा निर्देश कर सकती हैं।.

इस प्रकाशन हेतु मैं पुरुषोत्तमाचार्य जी के प्रयास और ट्रस्ट के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं तथा स्मारिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

भवत्सद्भावी

(महेन्द्र पाण्डेय)

6-ए दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110 002 दूरभाष : 011-23500000 फैक्स : 011-23500190
6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110 002, Phone : 011-23500000 Fax : 011-23500190
Email: pandey.bjp@gmail.com

गो–विज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर.

''कामधेनू कृषि तंत्र'' आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र एवम् प्रयोगशाला
खादी व ग्रामोद्योग आयोग एवम् जीवजंतु कल्याण बोर्ड भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
रजि. नं. एफ– 22569 (नागपुर) महा. FD Lic. No.ND/Ayu/48
प्रधान कार्यालय :–'कामधेनु' घटटे वाडा, पं. बंच्छराजजी व्यास चौक, चितार ओली, महल नागपुर –32
फोन –0712–2772273/2734182, Fax : 2721589 C/o
कार्यशाला : E-mail :gauvigyan@gmail.com, gauseva@yahoo.co.in Web Site : www.govigyan.com
एवम् प्रयोगशाला : 'सेवाधाम' देवलापार, ता. रामटेक, जिल्हा नागपुर – 441408

दि. 31 / 12 / 2021

संदेश

प.पू. महाराजजी को

सादर साष्टांग प्रणाम!

आपने संदेश के लिए आदेश दिया उसका पालन करने का प्रयास करता हूँ। अपनों से बात करना जरूरी है, संदेश की पात्रता नहीं है।

प्रभु कृपा से हम सभी भारतीय गोवंश की रक्षा में लगे जो इस युग में कोरोना जैसी भीषण स्थिति में भी ईश्वर का वरदान जैसा है क्योंकि मनीषीजन कहते हैं, गाय ही हमें तारेगी जैविक कृषि, पंचगव्य आयुर्वेद, देषी नस्ल संरक्षण, ग्रामीण स्वावलंबन रोजगार निर्मिती, पारंपरिक पशु चिकित्सा, अक्षय ऊर्जा स्त्रोत (गोबर व बैल)... आदि अनेक विषय गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर के हैं जो सृष्टि संतुलन का विज्ञान है।

आप सब इस पवित्र कार्य में अपना -अपना सर्वस्व अर्पण करें क्योंकि भारत ही गोवंश का महत्व सारी दुनिया को समग्र रूप से बता सकता है।

आपका अपना

सुनील मानसिंहका

राष्ट्रपति-सम्मानित
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा. राजस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार

मो: +91-8764044066
फोन: (0141)2376008
अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी-8, पृथ्वीराज रोड
जयपुर-302001

शुभाशंसन

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि देश का सुप्रतिष्ठित धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थान श्री सिद्धदाता आश्रम अपनी सुदीर्घ पावन परम्परा के अनुरूप **सुदर्शनालोक-2022** का प्रकाशन कर रहा है। आश्रम वैष्णव सेवा का दिव्यधाम तो है ही, यहां समाज हित के, देशहित के, शिक्षा के, गौसेवा के तथा जनहित के अनेक कार्य भी हो रहे हैं। सुदर्शनालोक से सांस्कृतिक प्रकाश भी फैलता है तथा आश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी व्यापक रूप से प्रसारित होती है। अनेक वर्षों से सुदर्शनालोक के दिव्य आलोक से हमारा समाज आलोकित हो रहा है। यह परम संतोष एवं गौरव का विषय है। **सुदर्शनालोक -2022** के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभाशंसा सहर्ष प्रेषित है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(देवर्षि कलानाथ शास्त्री)
विजयदशमी, सं. 2077, 25/11/2021

Dr. Pradeep Rai
Senior Advocate, Supreme Court of India
Vice-President, Supreme Court Bar Association

Date: 27.01.2022

MESSAGE

I am happy to note that **Janhit Sewa Charitable Trust,** Faridabad (Haryana) is bringing out the annual issue of **"Sudarshanalok Smarika Varsh- 2022"** with the aim to provide socio-academic-religious literature in the larger interest of mankind and to ensure harmony in the world. I am sure that society at large will continue to be benefitted by great work of the Trust.

The outstanding work of **Shri Siddhdata Ashram** operated by **Janhit Sewa Charitable Trust,** in the field of religious, social and spiritual activities is undoubtedly laudable.

I take this opportunity to offer my best regards and good wishes to the readers and associates of the Trust. I wish all the success to the publication of annual issue of **"Sudarshanalok Smarika Varsh- 2022".**

(Pradeep Rai)

2C & 2D, White House, 10, Bhagwan Das Road, New Delhi-110001
Mobile : + 91-9911045000 Phone : +91-11-23389505
E-mail : pradeep@pradeeprai.com

Sudershanalok_2022_Pages_1-32_Layout 1 13-Mar-22 11:25 AM Page 32

Sanrachna
SANRACHNA FOUNDATION
Registered office : F-29, Ansari Road, Darya Ganj, Delhi-110 002
Branch office : Ground Floor, E- Block, SGT University, Budhera, Gurugram- Badli Road, Gurugram(Haryana)-122505,
Phone No.9911936866, 0124-2278183,84,85

31 जनवरी 2022

श्रीमद् जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
श्री सिद्धदाता आश्रम
सुरजकुंड बडखल रोड, सेक्टर 44
फरीदाबाद, हरियाणा- 121003, इंडिया

श्रीमद् जगतगुरु रामानुजाचार्य श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज!
सादर नमन!

मैं समझता हूँ कि आप जनहित में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और साहित्यिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

आप और आपकी टीम जिस तरीके से लाखों लोगों के दुख-दर्द और पीड़ा को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, निश्चय ही यह प्रयास प्रेरणादायी है। आप अपने सकारात्मक प्रयासों से लोगों को सर्व शक्तिमान ईश्वर का अहसास कराते हैं और उन्हें ईश्वर से निरंतर जुड़े रहने का संदेश देते हैं। आश्रम के माध्यम से आप सदैव निःस्वार्थ जनसेवा में लगे हुए हैं। आपके इस कार्य की जितनी तारीफ की जाए, कम है।

आप वैकुंठवासी श्रीमद् जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के द्वारा बताए गए आदर्शों पर चलते हुए तथा आश्रम और दिव्यधाम की परम्पराओं का पालन करते हुए निरंतर जनसेवा में लगे हुए हैं। उल्लेखनीय है कि श्रीमद् जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की गणना देश के महान संतों में होती है जिन्होंने कई वर्षों तक घने जंगलों और प्रतिकूल परिस्थितियों में कठिन तपस्या की। समाज की भलाई के लिए उन्होंने आत्म-संयम तथा सद्पथ पर चलने का संदेश दिया।

लोगों तक दिव्य संदेश पहुँचाने के उद्देश्य से प्रकाशनार्थ 'सुदर्शनलोक' के 2022 संस्करण के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए मैं खुद को काफी गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

धन्यवाद
आपका विश्वासभाजन

अमोघ देव राय
कार्यकारी निदेशक
संरचना फाउंडेशन

राम न सकहिं नाम गुन गाई

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

महिमा जासु जान गन राऊ।
प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।।

गणेश जी महाराज ने नाम की महिमा को जाना, हृदय में धारण किया, आज भी उनकी सबसे पहले पूजा होती है।

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू।।

उस पावन नाम का हनुमान महाराज के स्मरण किया तो रामजी उनके हृदय में विराजमान हो गये और उनकी मुट्ठी में रहने लग गये।

महामंत्र जोइ जपत महेसू।
कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।

शंकर ने जान लिया और प्रत्येक जीव के लिये काशी में मोक्ष देने लग गये।

कहौं कहां लगि नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुन गाई।।

इस नाम की महिमा का वर्णन कहां तक किया जा सकता है। भगवान श्री राम भी उस नाम की महिमा गायन नहीं कर सके। उन्होंने विचार किया कि तेरे अन्दर ताकत है या नाम की ताकत है। रात को उठकर चल दिये। सरयू तट के किनारे पर एक पत्थर उठाया और फेंक दिया। पत्थर डूब गया। हनुमान जी महाराज देख रहे थे। पूछा, महाराज जी! क्या हुआ? कुछ नहीं हनुमान जी! हम सोच रहे थे कि ये पत्थर तैरे, उसमें क्या हमारा बल भी कुछ था, यही देख रहे थे। पर हमारे हाथ का फेंका हुआ पत्थर तो डूब गया। कहने का भाव भगवान का यह था कि मेरे शरीर रूप धरण करने में ताकत नहीं, मेरे नाम में ताकत है-

कहौं कहां लगि नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुन गाई।।

बाबा नानक साहिब जी भी यही कहते हैं-

चारों वेद पुराण सकल कर पेखे सर्व ढंढोल।
पूजस नाहिं हरि हरे नानक नाम अमोल।।

मैंने तो इस नाम की महिमा को ही जाना। अभी तक निरंकारी बना रहा, पर उसमें मुझे कुछ नहीं मिला।

सन्त दयाल कृपाल भये मो पर, तब यह बात बताई।

> “ बिना नाम के परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। नाम तो रखना ही पड़ेगा परमात्मा जी का। चाहे गोपाल जी रखें, चाहे कृष्ण जी रखें, चाहे माधो जी रखें। नाम तो रखना ही पड़ेगा बिना नाम के भगवान प्राप्त नहीं होते।

सर्व धर्म जब पूरण होइ हैं नानक गहो प्रभै शरणाई।।

उस परमात्मा का नाम ही दिया मुझे और उस नाम के सहारे मैं स्वतंत्र हो गया। माया मुझे नहीं सताती। माया मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पा रही है। यमराज का भय बिल्कुल हट गया है। अब तो ऐसा हो गया कि यमराज के सिर के ऊपर जूते समेत पैर रख के जाऊंगा, ये बाबा के शब्द हैं।

जब, मेरे प्रेमियो, मानवता आ गई तो फिर नाम की आवश्यकता बहुत जरूरी है क्योंकि उस नाम के बिना उद्धार नहीं है। नाम के बिना गुजारा नहीं है, नाम के बिना सच्चा सहायक कोई नहीं हो सकता। और नाम यहां भी है और वहां भी है। दोनों जगह नाम महाराज रक्षा करता है। परन्तु अपने किये हुए दुष्कर्मों का फल तो मानव को भोगना ही पड़ता है। पर यह निश्चित है कि वहां पर परमात्मा यम के झोटे नहीं खाने देता-

यम कंकड़ नेड़े न आवहिं। जब रसना हरि गुण गावजी।।

नाम की महिमा बहुत ही विचित्र है। नाम का लेना बहुत जरूरी है और उसका स्मरण करना जरूरी है।

बहुत से आजकल के पढ़े लिखे कहते हैं कि यह माला तो ढोंग है। बहुत से कहते हैं कि कबीर दास जी ने कहा है कि-

कर का मनका डारि के, मनका मनका फेर।

ऐसा कहते हैं कि माला का कोई औचित्य नहीं, सब बेकार है। पर मेरे प्रेमियो! मैं उन विद्वान प्रेमियों से सभा के अन्दर एक प्रश्न कर रहा हूं-

माला मन से लड़ मरी, क्यूं बिछुड़त है मोय।
बिना शस्त्र का सूरमा जीत सका क्या कोय।।

कैसा भी कोई बलवान ताकतवर हो और शस्त्र उसके पास में नहीं, तो मुझे बताओ कि क्या शत्रुओं को जीत लेगा? नहीं। माला

कहती है कि मैं भजन करने का हथियार हूं। अगर तू मुझे बिछुड़ा देगा तो तेरा हथियार क्या रहेगा? अगर तू जिह्वा को हथियार मानता है तो यह नहीं हो सकता, क्योंकि सन्त तुलसीदास भी उस नाम की महिमा का वर्णन करते हुये कहते हैं-

राम नाम मनिदीप धरूं, जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुं, जो चाहसि उजिआर।।
जीभ से नहीं कहा-जीह देहरी द्वार

मेरे प्रमियो! आप विचार कीजिये कि एक विभाग के लिये भगवान ने दो-दो जवान बनाये। चलने का काम एक है, उसके लिये दो पैर जवान बनाये। करने का काम है, उसके लिए दो हाथ बनाये। करने का विभाग एक और अंगरक्षक दो। देखने का विभाग एक, पर आंख दो दिये। सुनने का काम एक, कान दो बना दिये। सूंघने का काम एक, पर नथुने दो बना दिये। हर विभाग के दो दो। फेंफड़े दो बना दिये। गुर्दे दो बना दिए। और जिह्वा? जिह्वा से यही कहा कि तू परमात्मा का नाम ले, मधुर वचन बोल। पर जिह्वा कितनी बदमाश! विचार कीजिये, इसे बदमाश बोल रहा हूं। कितनी बदमाश है यह जिह्वा? संसार को नष्ट कर देती है। घर को नष्ट कर देती है। द्रोपदी ने यही तो कहा था कि अन्धे के अन्धे पैदा होते हैं। अट्ठारह अक्षोहिणी सेना खत्म हो गई, इस जीभ से। तो भगवान ने विचार किया कि जिह्वा तो संसार को नष्ट कर देगी, क्या करें? तो इसके नीचे रस्सा बांध दिया जिसको तलवा कहते हैं कि अब तो चुप रहेगी। पर रस्से से बंधी हुई भी चुप नहीं रहती। तो 32 पहरेदार बना दिये सख्त कठोर दांत, ताकि इस को बाहर न आने दें और ज्यादा बकवास करे तो काट दें। फिर भी नहीं मानती। फिर मजबूत गेट बना दिये। आप अस्पतालों में देखते हैं, जहां जगह-जगह लिखा होता है- 'बोल मत, चुप हो जा'। पर यह जिह्वा फिर भी नहीं मानती। इसलिये, यदि जिह्वा पर भरोसा किया जायेगा, तो मेरे प्रेमियो! यह डुबा देगी। यही जिह्वा स्वाद को बेस्वाद कह देती है। क्या भरोसा इसका? मीठा बढ़िया लाये, अरे यह तो बेस्वाद हो गया। भूख रही तहां तक तो स्वाद रहा, भूख मिट गई, अब मजा नहीं आ रहा। क्या विश्वास? इसलिये माला कहती है कि जिह्वा, जिस पर तू भरोसा कर रहा है, यह काम नहीं करेगी और हे मूर्ख मन! मैं उस प्रभु नाम स्मरण के लिये हथियार हूं। अगर कोई यह कह दे कि यह गलत है तो दुर्गा सप्तशती के सब से पहले माला के पूजन में लिखा गया है-

मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मानमे सिद्धिदा भव।।
अक्षतमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि
सर्वमंत्रार्थ साध्नि साध्य साध्म सर्वसिद्धिं
परिकल्पम परिकल्पम में स्वाहा।

माला से प्रार्थना की गई है कि तू मेरी मां है, महा माया है, सब कामनाओं को सिद्धि देने वाली है। हमारे समाज में एक भ्रान्ति फैल गई है। हो सकता है शायद इसलिए भ्रान्ति फैल गई हो कि माला हाथ में लेने से कोई हमको भगतजी न कह दे, क्योंकि भगत जी को हमने बहुत बुरा मान लिया है। महात्मा को और अधिक बेकार मान लिया है। किन्तु परमात्मा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये इनकी आवश्यकता है।

मीरा ने कहा-

बाबा मैं बैरागन हूंगी।
जेहि जेहि बिधि मेरो बालम रीझे,
सोइ सोइ रूप धरूंगी।।

परमात्मा को यह माला प्रिय है। अगर माला प्रिय नहीं तो मेरे प्रेमियो! आप परमात्मा के गले में माला क्यूं पहनाते हो? आप ने क्या मान लिया उनको? भगवान को क्या इतना छोटा मान लिया? विचित्र बात है! जिससे भगवान सुशोभित होते हैं, उस सुशोभित वस्तु के लिये हमारे आजकल के पढ़े लिखे निन्दा करते हैं, खराब कहते हैं, क्या यही हमारी मानवता रह गई? विचार कीजिये।

मेरे प्रेमियो! ठाकुर जी को कोई नमस्कार करने जाता है, शिवालय में जाता है तो शिवजी पर जल चढ़ाते हुए अच्छे अच्छे बच्चे, मेम साहिबा, मैंने देखा है कि पहले इधर-उधर देखती हैं, फिर दरवाजे की ओर देखती हैं- शिवजी की ओर नहीं, और मुंह फेर के पानी डाल देती हैं।

हमने एक बार पूछा कि मेम साहिबा! यह कौन सा विधान पण्डित जी ने बताया है? यह कौन सी विधि बता दी कि शिवजी की ओर पीठ कर के पानी डाल दो। ऐसी विधि कहीं लिखी होगी, मैंने तो नहीं पढ़ी।

उन्होंने कहा, महाराज जी! मैं तो इसलिये करती हूं कि शिवजी का व्रत मुझे बताया था एक पण्डित जी ने। मेरे बच्चे पर ग्रह है। अब लोग पड़ोसिनें क्या कहेंगी कि भगतानी बन गई है। इसलिये चुपचाप आती हूं और जल डालकर चली जाती हूं।

इस प्रकार की हमारी भक्ति है, और कहते हैं कि भगवान हमसे खुश नहीं होता। ठाकुर जी के मन्दिर के आगे होकर निकलते हैं तो केवल हाथ हिलाकर निकल जाते हैं जैसे बस स्टाप पर बस रोकने के लिये करते हैं। वाह री तेरी संस्कृति! हे मेरे भगवान! जहां वेदों का वास है, अठारह पुराणों का निवास है, जहां हर युग में सन्त होता चला आया है उस भूमि का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि भगवान को चन्दन लगाने के लिये शर्म करते हैं कि कोई यह न कह दे कि यह भगत जी है या ठाकुर जी का भगत है।

शरीर को सुवासित करने के लिए एक पाव नहीं तो कम से कम 10 ग्राम सुगंधित पाउडर लगाते हैं पर चन्दन की एक बिन्दी लगाने में शर्म आती है। 250 ग्राम पाउडर मलने में शर्म नहीं आती। परमात्मा ने तुम्हारा स्वरूप पुरूष का दिया है, उद्योग का दिया है, तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है। तुम स्नान करो, पवित्र बनो, स्वस्थ बनो।

ठाकुर जी महाराज के यहां नमस्कार करने में डरते हैं, कोई देख न ले। दण्डवत नहीं कर सकते, शर्म आती है कि मैं बड़े घर का आदमी हूं, कोई क्या कहेगा? और साधारण छोटे छोटे काम निकालने वाले जिनको मंत्री कहते हैंः यहां बैठे हैं, चाहे नाराज हो जायें, उनके आगे लम्बे पड़ जाते हैं, भले ही उनके आगे कीचड़ हो। वाह रे हमारा भारतवर्ष!

हमारे भगवान की मान्यता कुछ नहीं रह गई। मनुष्य ही भगवान बन गया। कितना दुर्भाग्य है? मैं इसलिये कह रहा हूं कि क्या लक्ष्य रहा हमारी मानवता का? अगर लक्ष्य बना लिया जाये और उसके बाद परमात्मा की प्राप्ति न हो तो मैं गवाह हूं, मुझे कोल्हू में पिलवा दो। कौन कहता है नहीं मिलेंगे। पर उस भगवान की सेवा हम दिल से नहीं करते, केवल इच्छा से करते हैं, कामना के लिये करते हैं, अपनी कुछ प्राप्ति के लिये करते हैं। क्यों मिलेंगे जी? क्या वे हमारे नौकर हैं? और जब वह परमात्मा शुद्ध भावना को देखते हैं, मन को निर्मल देखते हैं तो तुरन्त लिपट जाते हैं-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

तुरंत लिपट जाते हैं। जब शबरी को लिपटा सकते हैं, गिद्ध को गोदी में उठा सकते हैं, गज की रक्षा कर सकते हैं, हमें तो उन्होंने अपनी कृपा का शरीर दिया हुआ है, हमारी रक्षा क्यों नहीं करेंगे, अवश्य करेंगे।

तो मेरे प्रेमियो! हम अपना लक्ष्य वह बनायें जो 6 साल के राजा ने बनाया था कि यहां भी और वहां भी- दोनों जगहों के लिए कुछ करें। अवश्य हमको मिलेगा। जब खेत में बीज डालोगे तो अवश्य मिलेगा। मैंने आश्रम पर अभी पिछले दिन अपने प्रेमियों को एक जौ का पौध दिखाया। भगवान ने एक पौधे में हजारों दाने दिये। वह भगवान देता है परन्तु हम उस पर विश्वास नहीं करते कि वह देगा भी या नहीं। यहीं मामला बिगड़ जाता है।

ईश्वर के नाम का स्मरण करना जरूरी है और मेरे प्रेमियो!

इसके लिए गृहस्थ नहीं त्यागना है। गृहस्थ में ही तो ऋषि बाल्मीकि, भृगु, मरीचि, अंगिरा, भारद्वाज, पुलत्स्य, जमदग्नि, ऋषियों के नाम बोल रहा हूं, सब ने गृहस्थ में रहकर ही परमात्मा को प्राप्त किया, मोक्ष प्राप्त किया। यह सब नाम की महिमा है।

मेरे प्रेमियो! बिना नाम के परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। नाम तो रखना ही पड़ेगा परमात्मा जी का। चाहे गोपाल जी रखें, चाहे कृष्ण जी रखें, चाहे माधे जी रखें। नाम तो रखना ही पड़ेगा बिना नाम के भगवान प्राप्त नहीं होते। सांसारिक रूप से मैं कहता हूं कि प्रेमियो! अपने बच्चों के नाम रखते हो। आजकल तो 'हम दो हमारे दो' है, और अब चल गया कि 'हम दो एक और हम दोनों का एक' ऐसा भी हो गया। जो भी दो चार पांच बच्चे हों, उनका नाम तो रखते ही हैं। बिना नाम के वे आ जायेंगे क्या? अरे, कह दें कि आ जाओ बच्चो, तो कौन सा बच्चा आयेगा? तभी तो किसी का नाम बीटू, टीटू, ऊटू-यही तो रखते हैं, जो कुत्तों के नाम हैं। कितने अच्छे आदमी हैं? बोलते हैं, महाराज जी! छोटा सा नाम रखना।

अरे भाई! बड़ा नाम लेने में क्या फर्क पड़ रहा है? रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र रख दें तो क्या फर्क पड़ गया? बोलते हैं, नहीं नहीं, छोटा सा रखो। बड़ी विडम्बना हमारे भारतवर्ष की है। इस नाम के द्वारा बहुतों का उद्धार हो गया, बेटे बेटियों के नाम रखने पर। अजामिल जैसे हत्यारे ने अपने बेटे का नाम नारायण रखा और मोक्ष पद को प्राप्त हुआ, केवल बेटे का नाम रखने पर। हम तो वहां जाना ही नहीं चाहते, बुरी चीज मान ली। हम तो लड़कियों का नाम पप्पी, ढपली, बबलीः यही तो रखेंगे। क्यूं? इसलिए कि भगवान का नाम जिह्वा पर न आ जाए, यह कसम खा रखी है। भगवान इतना बुरा है, इतना बुरा भगवान को मान लिया है कि अगर किसी बच्चे का नाम उसके नाम पर रख दिया और वह भूल चूक से आ जाये तो बड़ा गड़बड़ हो जायेगा। शायद हमें घोर नर्क में जाना पड़े। इसलिये हम परमात्मा का नाम घरों में नहीं रखते। क्या यही हमने मानवता का लक्ष्य बनाया है?

लक्ष्य वह हो जिसमें सांस-सांस में परमात्मा का नाम आता रहे और सांस-सांस में उसका स्मरण होता रहे, और अपने घर का धंधा खूब करें। परमात्मा ने कब कह दिया कि उसका भक्त दरिद्र होता है। यह एक झूठी बात हो गई, यह एक गलत बात पैदा हो गई।

भक्त स्वयं अपने लिये धन नहीं चाहता है। मैं प्रपंच में पड़ जाउंगा। इसलिये, परमात्मा! मुझे तू चाहिये। वे स्वयं नहीं मांगते। वे कह दें कि तू चाहिये, तेरी कृपा चाहिये, क्यों नहीं आयेगी वो? लक्ष्मी नाथ समारम्भां जो लक्ष्मीनाथ है उसमें वह न आये, यह कैसे हो सकता है? असम्भव। परन्तु सन्त लोग चाहते कम हैं। प्रपंच में पड़ना नहीं चाहते कि छापे ही पड़ते रहें। उन्हें क्या लेना देना है। इसलिये वे कम चाहते हैं। वरना, मेरे प्रेमियो! उस परमात्मा के नाम से कभी दरिद्रता घर में नहीं आ सकती, कभी कलह नहीं आ सकती। नाम की महिमा बहुत विचित्र है। और वह नाम जो आपका मन भाये, मैंने यह भी नहीं कहा कि अमुक नाम है, जो आपके मन आये, उसी नाम का आप स्मरण करें। परन्तु वह मनमुखी नहीं, गुरूमुखी हो कर करें।

वैसे तो मैं यह कहूंगा कि सर्वोपरि परम तत्वसार नाम को लेना चाहिए। बाबा नानकदेव जी फरमान करते हैं। आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक हो सो भी सच। वो जुगादि काल में भी सच्चा रहा है, मध्य काल में भी सच्चा रहा है और युग युग में भी सच्चा रहा है। वर्तमान में सच्चा है और आगे भी सच्चा रहेगा। दशम पातशाही ने उसी नाम का नारा दिया-'सत् श्री अकाल'। सच्चा कौन है? जो श्री का पति उसी का नाम अकाल पुरूष है- 'सत् श्री अकाल'। वही सत्य है जिसकी पत्नी श्री है। जो श्रीपति है वही सच्चा है और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि 'राम गयो रावण गयो, जाका बहु परिवार', गुरूग्रंथ साहब में लिखा है। राम आये और चले गये, कृष्ण आये और चले गये, परन्तु वह आया न गया-'सदा क्षीर सागर सयन'। सदा एक रस रहता है और उसी के द्वारा राम, कृष्ण आदि का निर्माण होता है। मूल तो यही है-

जो सींचे तू मूल को, फूले फलै अघाय।

अगर मूल में पानी दे देगा तो पौधा हरा-भरा हो जाएगा, और फल-फूलों से लद जायेगा। केवल फूलों में पानी देने से फूल नहीं रूकेंगे, सड़ जायेंगे। फल में पानी देने से वृद्धि नहीं होगी, फल सूख जायेंगे। मूल में पानी देने से, बिना सोचे समझे, बिना देखे, पांचों अंग पूर्ण हो जाते हैं। पर तत्वसार तो श्रीहरि नारायण ही है। उसको हरि कह दें, नारायण कह दें, राम कह दें-

'कृष्णस्तु भगवान स्वयं, रामस्तु भगवान स्वयं'

ये तो तीनों रूप विभव अवतार में आये, तीनों एक ही रूप हैं। वही भगवान नारायण राम बन कर आये। स्वयंभु मनु और शतरूपा को वरदान दिया कि मैं आ रहा हूं। वही कृष्ण बन कर आये। कोई भी नाम लें परन्तु वह नाम धारण किया जाता है। जैसे जमीन स्वयं में बीज खुद नहीं बोती, अच्छा योग्य किसान ही बीज बोता है, और बीज बोने के बाद वह जमीन लहलहा उठती है। तो नाम की महिमा अवश्य है।

गुरु की महिमा भगवान से भी अधिक

अनन्तश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
पीठाधीश्वर- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

गुरुदेव की महिमा भगवान से भी अधिक है, इसलिये वाल्मिकि जी कहते हैं-

रामजी तुमते अधिक गुरु जिय जानी
सकल भाव सेवहिं सम मानी
बिन गुरु होये न ज्ञान!
सद्गुरु वैद वचन बिस्वासा।
संजम यह न विषै कै आसा।।

श्री सद्गुरुदेव को अपना समर्थ वैद्य बनावें। उनके श्री वचनों पर अचल विश्वास रखें।

एक महापुरुष तत्व ज्ञानी थे। उनका नाम श्री जालपा सिद्ध था। उनके यहां एक नये शिष्य आये, उसने कहा मैं भी आपको अपना शिष्य बनाना चाहता हूँ। महापुरुष ने कहा किसलिये?

तो शिष्य ने कहा- मैं परम सत्य का परिचय प्राप्त करना चाहता हूँ।

गुरु जी ने चेला नहीं बनाया और उसे रख लिया आश्रम में। और वहां संत सेवा होती थी तो उनको कहा ठीक है तुम एक काम किया करो- बोले- यहां संत आते-जाते रहते हैं रसोई के लिये। तुम रोज धान कूटकर चावल निकाला करो, यही तुम्हारी सेवा है। जो आज्ञा। वो सुबह से धान को साफ करता और कूटकर रसोई के लिये तैयार करता। उसका पूरा दिन इसी में निकल जाता।

गुरुजी सत्संग करते उसको उसमें बैठने का भी समय नहीं मिलता। ऐसे ही धान कूटते-कूटते बारह वर्ष हो गये। उसने एक बार भी नहीं कहा कि गरु जी आपने मंत्र तो सुनाया ही नहीं, उपदेश दिया नहीं, कल्याण की बात कुछ बताई नहीं। खाली धान कूटने में लगा दिया। अच्छा मुफत का नौकर आपको मिल गया, अब धरे रखो अपनी धर्मशाला, हम तो चले।

ऐसा विचार उसके मन में नहीं आया। महाराज बारह साल हो गये और अब गुरुजी वृद्ध हो चले थे। गुरु जी ने कहा- कि हमें अपने ही सामने इस मठ में किसी को नियुक्त कर देना चाहिये। अब शिष्य तो बहुत! पर कैसे परिक्षण हो? किसे नियुक्त करे? उन्होंने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और उस धान कूटने वाले

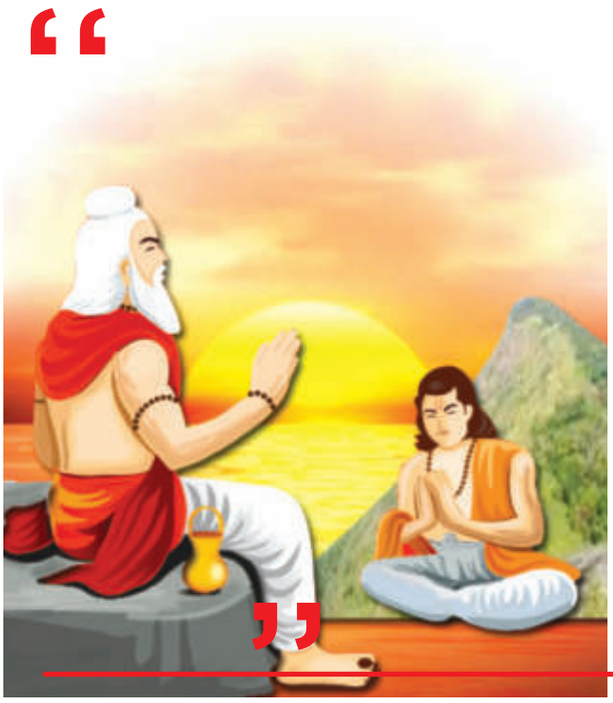

को भी बुलाया। महाराज जी ने कहा- तुम लोगों को इसलिये बुलाया है।

सत्य के संबंध में अपने-अपने विचार इस साइन बोर्ड के ऊपर लिख दो। बड़े-बड़े विद्वान थे सबने अपना-अपना अनुभव लिखा।

महाराज सुनते गये! वे जो धान कूटने वाला था चुपचाप बैठा था गुरुजी ने कहा कि तुमने कुछ नहीं कहा? तुम भी तो कुछ लिखो? जो आज्ञा गुरुदेव! उसने लिखा-

जब तक यह मिथ्या है, और यह सत्य है,

यह भेद बना हुआ था, तब तक यह वृत्ति बनी थी। कि यह सत्य है यह असत्य है। किंतु सद्गुरु की कृपा से भेद के नष्ट होने के पश्चात अब सत्य ही है।

और कुछ है ही नहीं। केवल सत्य रह गया है गुरुजी ने हृदय से लगाया और अपनी चादर उड़ा दी और बोले ये मेरा उत्तराधिकारी होगा।

कहने का अर्थ यह है- कि सेवा करने वाले को धान कूटते कूटते हो गया! सेवा के भाव का त्याग मत करो, सेवा को अपनी वृत्ति बना लो, जहां रहो वहां सेवा जरूर करो। सेवा अपना स्वभाव बन जाये।

गुरु महिमा

तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना।

आन जीव पावर का जाना ।।

गोस्वामी जी ने लिखा-

शंकर जी गुरु कैसे?

सरल भाषा में तीन कार्य जो करे वह गुरु-

1. गुरु वही जो हरि मिलावे-

जो चीज ठाकुर जी नहीं देते, वह गुरु देते हैं। हमारे ठाकुर जी कैसे हैं?

माल मुलक हरि देत हैं और हरिजन हरि देत गुरुजन हरि देत।

भगवान तो सांसारिक वस्तुऐं देकर भी पीछा छुड़ा लेते हैं लेकिन सद्गुरु भगवान से मिलाते हैं।

वेद शास्त्रों में वक्ता के रूप में भगवान शिव उपस्थित हैं।

2. गुरु वही जो संत सिवावे-

संत की सेवा में लगाये वो जीव को अपने ठाकुर से जोड़ते हैं, संतों से जोड़ते है, सद्गुरु ऐसी दृष्टि प्रदान करते हैं सभी जगन्नाथ ही नजर आते हैं।

संतों की महिमा भगवान भी नहीं कह पाते।

हीरे की कीमत कोई जौहरी ही पहचानता है, सद्गुरु की कृपा जिनको प्राप्त होती है, वो ही पहचानते हैं।

गुरु की कृपा में हरि की प्राप्ति -संत सेवा की प्राप्ति।

3. गुरु वही जो विपिन बसावे, गुरु वही जो सन्त सिवावे।

भगवान शंकर ये तीनों बात हैं-

शंकर जी की संतों में निष्ठा

इन करनी बिनु गुरु न कहावै

भगवान ने स्वयं कहा- गुरु तत्व को मेरा ही तत्व समझो, अर्थात में ही गुरु हूं।

उद्धव जी से भगवान कह रहे हैं-

आचार्य माम विजानियात नावमन्येत कर्हिचित।

आचार्य अर्थात् गुरु को मुझे ही जानो। मैं ही तुम्हारे गुरु के रूप में हूं। मुझमें और गुरु में अर्थात महापुरुष में कोई मतभेद मत मानो। इसलिए जैसी भक्ति भगवान के प्रति हो वैसी ही भक्ति गुरु के प्रति भी होनी चाहिए। गुरु की भक्ति को श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि भगवान तो अपने कानून में बंधे हैं।

वो कहते हैं निर्मल मन जन सो मोही पावा। लेकिन हमारा मन तो अभी मलिन है, जब तक यह मन निर्मल नहीं हो जाता, हम ईश्वर प्राप्ति नहीं कर सकते। शिष्य अतः करण (मन) की शुद्धि के बाद वो दिव्य प्रेम, दिव्य शक्ति भी गुरु ही प्रदान करता है। इसलिए गुरु का स्थान सबसे ऊंचा माना गया है।

> “शरण होने का मतलब अपना तन, मन, प्राण, देह, इन्द्रिया, लोक-परलोक, गृह-कुटुंब अपना सर्वस्व भगवान के चरणों में न्यौछावर कर देना। इसका नाम है शरणागति।

गुरु को मेरा ही स्वजन ही मानो- पर एक श्रद्धा विश्वास हमारे हृदय में नहीं बन पाता है, हमारे अंदर श्रद्धा, विश्वास की कमी के कारण सद्गुरु के प्रति मनुष्य बुद्धि बनी ही रहती है। मनुष्य बुद्धि बने रहने के कारण जैसे मनुष्य गुण, दोषमय है।

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥6॥

भावार्थ-विधाता ने इस जड़-चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं॥6॥

ना तो सब में गुण ही गुण हैं और ना तो अवगुण ही अवगुण हैं। जब हमारे हृदय में सद्गुरु के प्रति मनुष्य बुद्धि होती है जो भी एक मनुष्य में दोष संभव हैं, वो सारे दोष हमारी बुद्धि में पहले आ जाते हैं। और जब दोष बुद्धि हमारे चित्त में आ जाती है तो सद्गुण से लाभ हमें मिलना चाहिये, वह लाभ हमें नहीं मिल पाता। कई बार हम लोग दुर्भाग्य के कारण अपने पूज्य गुरुजनों से ही आदर सत्कार की इच्छा रखते हैं, हम गुरुजी के चेले बनें न बनें, पर गुरुजी हमारे चेला बनकर रहें। चेलो बनकर रहें, इसका मतलब जानते हो?

आज्ञाकारी- हमारे अनुकूल व्यवहार से ऐसी हमारी इच्छा बनी रहती है, हमारे भीतर से हमारे मन के अनुकूल गुरुजी सर्वदा व्यवहार करें तब तो गुरुजी अच्छे, और मान लो हमारे मन के अनुकूल व्यवहार नहीं करे तो गुरुजी अच्छे नहीं हैं। गुरुजी में अमुख दोष हैं। ये बात हमारे मन में आने लगती है। इसमें गुरु तत्व की तो कोई हानि नहीं होती! पर जिसने समर्पण किया है उसकी बहुत बड़ी अध्यात्मिक हानि हो जाती है।

इस हानी से बचने के लिये भगवान ने साधन बताया!

'आचार्य माम विजानियात'

किसी भी अवस्था में गुरु तत्व की अवमानना मत करना। गुरु तत्व का कभी तिरस्कार नहीं करना। गुण दोष की दृष्टि इसलिये बनी हुई है क्योंकि हमने उन्हें मनुष्य समझ लिया है। इस गुण दोष से बचने की पद्धति भगवान बता रहे हैं-

उन्हें कभी मरण धर्म मनुष्य नहीं मानो!

क्योंकि **'सर्वदेव मयो गुरु'**

गुरु सर्वदेवमय हैं। रामकृष्ण नारायण जगदगुरु हैं और यह आचार्य उन्हीं के स्वरूप हैं इसलिये आचार्य भी जगद्गुरु है, प्रत्येक शिष्य के हृदय में ऐसी सरल सच्ची श्रद्धा बने। हमारे जैसे मलीन जीव को इसी शरीर में, इसी जन्म में, भगवत प्राप्ति अत्यंत कठिन थी। इसलिये करूणामय भगवान ने कृपा करके सदगुरु के अवतार में अपने आप को हमारे सामने प्रकट और स्वयं भक्ति करके साधना, उपसना की पद्धिति अपने चरित्र के माध्यम से बताकर, अपनी वाणी के माध्यम से बताकर हमारे परम कल्याण का निवारण किया है। ऐसा अपने मन में भाव शिष्यों को रखना चाहिये। किन्तु गुरुजी के मन में ऐसा भाव भूलकर भी नहीं आवै- कि हम भी भगवान है, हमारे अतिरिक्त रामकृष्ण नारायण नहीं हैं।

गुरु की महिमा ही इसलिये है क्योंकि वो जीवों को भगवान से जोड़ते हैं। यह संसार, यह शरीर हमारा नहीं है, नहीं है, नहीं है। हमने देह को पुत्र मान रखा था तो फिर देह तो सामने उपस्थित है, फिर उसको शमशान में क्यों ले जाते हैं? इसका अर्थ है देह पुत्र नहीं। देह के भीतर जो देही है, वह परमात्मा है। आत्म चेतन के रूप में जो विराजमान है वह परमात्मा ही पुत्र रूप से प्रकट होकर हमें पिता का सुख प्रदान कर रहा है। फिर भगवान ने संसार क्यों बनाया?

शरीर क्यों बनाया? इसका अत्यंत सरल अर्थ है-

हम भगवान के हैं, भगवान हमारे हैं, शरीर और संसार हमें भोग के लिये नहीं मिला यह भगवान की भक्ति के लिये मिला है, भगवान की उपासना के लिये मिला है।

एक संत जो, भगवत प्राप्त सिद्ध कोटि के संत थे। दो लंगोटी, दो अंग वस्त्र इसके अलावा कोई सामग्री नहीं रखते थे। सारा जीवन कंचन कामिनी से मुक्त गया। जब अत्याधिक प्रेम का आवेश बढ़ गया तो व्याकुल रहते, रोते रहते तो डाक्टर ने कहा- इनको ज्यादा देर कीर्तन में बैठने नहीं दिया जाये। ज्यादा लोगों में मिलने न दिया जाये, इनका शरीर अब ज्यादा रहेगा नहीं। तीन चार दिन उनको कहीं जाने नहीं दिया। सब लोग कहते महाराज जी विश्राम कीजिये, संत जी ने कहा- तीन दिन हो गये क्या बात है तुम हमें कहीं जाने नहीं दे रहे हो? क्या बात है? सेवक ने हाथ जोड़कर कहा- महाराज जी आपका शरीर इस योग्य नहीं है कि ज्यादा देर आप कीर्तन में बैठ सके, लोगों से मिल सकें।

डाक्टर ने मना किया है। इतना सुनकर वो मुस्कुराये और उन्होन कहा कि हमने तो शरीर ही इसलिये लिया था इससे कीर्तन करेंगे, भगवान की कथा सुनेंगे, भगवान की चर्चा करेंगे, जब यह शरीर कथा, कीर्तन के योग्य ही नहीं है, भगवान की सेवा के योग्य नहीं है, तो इस शरीर को रखकर हम करेंगे ही क्या? ऐसा कहकर वो मौन हो गये और दो दिन के अंदर ही उन्होंने देह का त्याग कर दिया। दीक्षा को शरणागति संस्कार कहते हैं शरणागति यानि भगवान की शरण हो जाना! शरण हो जाने का मतलब समझते हैं? शरण होने का मतलब अपना तन, मन, प्राण, देह, इन्द्रिया, लोक-परलोक, गृह-कुटुंब अपना सर्वस्व भगवान के चरणों में न्यौछावर कर देना। इसका नाम है शरणागति। इंद्रिया जब भगवान को समर्पित हो गई तो वह पाप कर्म की ओर कैसे जाएंगी?

समर्पित मन, समर्पित बुद्धि, समर्पित चित्त, समर्पित अहंम

यदि हमारा मन, देह, बुद्धि भगवान से विमुख हो रहा है, लोगों की ओर जा रहा है तो इससे पक्क। यह जान लेना चाहिये कि अभी हम ईमानदारी से भगवान के शरणागत नहीं हुये हैं, फिर दीक्षा का लाभ नहीं मिलेगा!

हमें पाप की उत्पत्ति पर विचार करना चाहिये। सबसे पहले अशुद्ध संस्कार, पाप की वृत्ति मन में आती है, मन के बाद वह इन्द्रियों में आती है, फिर शरीर में बनती है।

हम अपने मन को शुद्ध कैसे करें?

हमारे मन में पाप की वृत्ति का उदय न हो इसका सर्वोपरि साधन है हर समय भगवान के नाम की स्मृति बनाके रखना। मानसिक नाम जप- जागने से सोने तक छह माह अभ्यास करने से तुम्हारा मन शुद्ध हो जाऐगा। मन के पवित्र होने से बुद्धि पवित्र हो जाऐगी, तो वाणी पवित्र होने पर पर क्रिया अपने आप पवित्र हो जाएगी।

पाप से बचने का एक ही साधन है, चलते फिरते नाम जप।

फुर्सत किसी को मिलने वाली नहीं है संसार सागर है इसमें अनुकूलता प्रतिकूलता की लहरें उठ रही हैं। थपेड़े पड़ते रहेंगे इसी थपेड़ों के बीच में भजन कर लो तो कर लो! अलग से समय किसी को नहीं मिलेगा। किसके जीवन में कितना समय बाकि है यह भी नहीं कहा जा सकता।

भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक
तत्व एक ही है।

इनके पद वंदन कियै नासै विघ्न अनैक
बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥5॥

भावार्थ :-मैं उन गुरु महाराज के चरणकमल की वंदना करता हूँ, जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं॥5॥

गुर आगमनु सुनत रघुनाथा।
द्वार आइ पद नायउ माथा॥1॥

गुरु का आगमन सुनते ही श्री रघुनाथजी ने दरवाजे पर आकर उनके चरणों में मस्तक नवाया।

गुरु मरे और चैला रोया
कहे कबीर दोनों ने खोया

गुरु तत्व परब्रह्म है। गुरु कभी मरते नहीं हैं वो गुरु हमारे रोम रोम में विराजमान हो गये हैं आपको अनुभव होगा गुरु हमारे साथ हैं।

गुरु पूर्णिमा का वास्तविक अर्थ है जीव का मायातीत महापुरुष के प्रति पूर्ण शरणागति।

वेद में कहा- थोड़ा भी अंतर अगर होगा तो शरणागति पूर्ण नहीं कहलाती। जैसे एक हाथ में परात लो और एक हाथ में लौहा लो, पारस लोहे को सोना बनाती है लेकिन शर्त यह है कि पूर्ण मिलन हो- लोहा पूर्ण शरणागत हो, अगर थोड़ी भी दूरी है तो सोना नहीं बनेगा।

द्रोपदी ने दांत में साड़ी दबाया भगवान नहीं आये-
अर्जुन ने गीता में प्रारंभ में ही कह दिया था-
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। 2.7।।

अब मैं आपका शिष्य हूँ और शरणागत हूँ। कृपया मुझे उपदेश दें।

प्रपन्न माने पूर्ण शरणागत और शिष्य हूँ!

यह मानने पर निर्भर करता है- भगवान ने कहा- शरणागत है पर प्रपन्न- पूर्ण- चरणों पर गिरा हुआ, मन सहित शरणागत! अर्जुन कहता हैं- मैं प्रपन्न हूं, भगवान कहते हैं- हमें धोखा देता है? अगर प्रपन्न है तो दिमाग क्यों लगा रहा है अपना? पाप होगा, नर्क मिलेगा मैं युद्ध नहीं करूंगा। पूरी गीता में भगवान ने ज्ञान दिया और आखिर में एक शब्द जोड़ दिया!

'सर्व धर्मान परित्यज्य'

सब धर्मों को छोड़कर 'मामेकं' शरणं बृज''

एक मेरी शरण में आना। और जो तू कहता है कि पाप लगेगा! तो मेरा कानून है

अहंत्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।18.66।।

जो मेरे ही पूर्ण शरणागत हो जाता है उसके अनन्त जन्म के पाप नष्ट कर देता हूं। मैं पूर्ण शरणागत के समस्त पाप, पूर्ण पाप नष्ट कर देता हूं। और आगे पाप नहीं करेगा यह ठेका ले लेता हूं। लेकिन पूर्ण शरणागत- मन, बुद्धि के साथ हो तब।

भगवान कहते हैं- अर्जुन मन, बुद्धि मुझे दे दे।

गुरु पूर्णिमा मनाने का असली भावार्थ है गुरु की बुद्धि में अपनी बुद्धि जोड़ दें।

जैसे एक अनपढ़ ग्वार, एक वकील की बुद्धि में अपनी बुद्धि जोड़ देता है और कोर्ट में वही ब्यान देता है जो वकील ने बताया है।

डाक्टर हमें जो दवा देता है हम वही लेते हैं, तब बीमारी जाती है। तो संसार में हम सब जगह पूर्ण शरणागति का सिद्धांत अपनाते हैं और लाख रूपया-जिंदगी की कमाई बैंक में जमा करा देते हैं। वहां हम कुछ संशय नहीं करते। हमें मन, बुद्धि को शरणागत करना ही होगा।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।9.22।।

परंतु जो निष्कामी – पूर्ण ज्ञानी हैं – जो संन्यासी अनन्यभाव से युक्त हुए अर्थात् परमदेव मुझ नारायण को आत्मरूप से जानते हुए मेरा निरन्तर चिन्तन करते हुए मेरी श्रेष्ठ – निष्काम उपासना करते हैं? निरन्तर मुझमें ही स्थित उन परमार्थज्ञानियों का योगक्षेम मैं चलाता हूँ। अप्राप्त वस्तुकी प्राप्तिका नाम योग है और प्राप्त वस्तुकी रक्षा का नाम क्षेम है? उनके ये दोनों काम मैं स्वयं किया करता हूँ। क्योंकि ज्ञानी को तो मैं अपना आत्मा ही मानता हूँ और वह मेरा प्यारा है इसलिये वे उपर्युक्त भक्त मेरे आत्मारूप और प्रिय हैं।

भक्त हैं वे स्वयं भी अपने लिये योगक्षेमसम्बन्धी चेष्टा करते हैं? पर अनन्यदर्शी भक्त अपने लिये योगक्षेमसम्बन्धी चेष्टा नहीं करते। क्योंकि वे जीने और मरने में भी अपनी वासना नहीं रखते? केवल भगवान् ही उनके अवलम्बन रह जाते हैं। अतः उनका योगक्षेम स्वयं भगवान् ही चलाते हैं।

जितनी मात्रा में शरणागत होती है उतनी मात्रा में उन्हें देता हूँ।

Sudershanalok_2022_Pages_33-47_Layout 1 13-Mar-22 11:26 AM Page 41

वेदों की आज्ञा

जगद्गुरु रामानुजाचार्य **स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज**
पीठाधीश्वर - श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्, भक्ति वाटिका, देवरिया, उ.प्र.

भारतीयों का सर्वमान्य ग्रन्थ वेद है। वेदों की आज्ञा का पालन करना ही परम धर्म है। ज्ञातव्य है कि वेदों की रचना किसी व्यक्ति ने नहीं की है, इसीलिये वेदों का कोई रचनाकार नहीं है।

वेद तो अपौरुषेय है, स्वत: प्रमाण है, भगवान् श्रीमन्नारायण का श्वास है तथा चतुर्मुख ब्रह्मा जी के मुख से नि:सृत है।

वेद भगवान् की आज्ञा -

'उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः॥'

अर्थात् अब तो भ्रमनिद्रा से जागो, उठो, श्रीभगवान् की शरणागति करो तथा दैन्यभाव से भगवदाश्रित होकर भगवद्दत्त साधनों का उपयोग करते हुये निश्चय करो कि मैं अपने जीवन में सब कुछ कर सकता हूँ।

ये श्रुति का प्रोत्साहन है।

सबसे परे पुरुष अर्थात् नारायण हैं, उनसे परे कोई नहीं है-

पुरुषान्न परं किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः॥

(कठोपनिषद् 1.3.11)

उन्हीं भगवान् के श्रीचरणों के आश्रित होने के बाद भी मन में यदि सम्मान बड़ाई पाने के लिये जीवन का बहुमूल्य समय नष्ट हो रहा है, तो मानकर चलो कि अभी मैं भगवान् के आश्रित नहीं हो पाया हूँ, अभी मेरी शरणागति नहीं परिपक्व हुयी है, यही है विवेक ' विवेचनं विवेक:'।

अपने जीवन में जो प्रमाद है, भूल हुयी है,असावधानी हुई है, वही है मृत्यु-

'प्रमादं वै मृत्युं ब्रवीमि।'

(महाभारत उद्योगपर्व 42.4)

गोस्वामी तुलसीदास जी विनय-पत्रिका में लिखते हैं-

'चहौं न सुगति, सुमति, संपति कछु, रिधि-सिधि बिपुल बड़ाई।
हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई।। (103)

शरणागत का मन तो सदैव श्रीभगवान् की ओर बढ़ता है, यदि मन में चाह बनी हुई है या मन विषयी हो रहा है तो आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है, क्योंकि विषयी मन ही बन्धन का कारण है, अन्यथा श्रीभगवान् का अंश जीव बन्धन में पड़े ही क्यों ?

श्रीमद्भागवत में श्रीब्रह्माजी कहते हैं -

चेतः खल्वस्य बन्धाय मुक्तये चात्मनो मतम्।
गुणेषु सक्तं बन्धाय रतं वा पुंसि मुक्तये।। 6 3.25.15 8

मन यदि श्रीभगवान् के श्रीचरणों में लग गया तो समझना चाहिये कि मेरे द्वारा की गई शरणागति सफल हो गई, मुझे निश्चित मिलेंगे श्रीभगवान।

वास्तव में मन ही बन्धन एवं मोक्ष का कारण बनता है, इसलिए मन कैसे सुधरे, इसके लिए आचार्य गुरुदेव की सन्निधि का लाभ लेना चाहिए।

मन को उलटकर पढ़ने पर वह नम बन जाता है, अर्थात् नमन करने से, नाम जपने से व नम्र रहने से मन सुधरता है, श्रीभगवान् की ओर बढ़ता है तथा उन्हीं में समाहित हो जाता है।

तावद् रागादयः स्तेनास्तावत् कारागृहं गृहम्।
तावन्मोहोऽघ्रिनिगडो यावत् कृष्ण न ते जनाः॥

(श्रीमद्भागवत 10.14.36)

श्रीभगवान् की शरणागति के पूर्व ही अनेक विपत्तियां घेरे रहती हैं, शरणागति के बाद तो विपत्ति भी सम्पत्ति हो जाती है।

यह गुन साधन तें नहिं होई।
तुम्हरी कृपाँ पाव कोई कोई॥

(श्रीरामचरितमानस)

निश्चिततः हम सभी को ये मानकर चलना है कि भगवान् श्रीनारायण को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय वे ही हैं, अर्थात् उनकी अमोघ कृपा ही है।

उन्हें ही उपाय एवं उपेय मानकर सम्प्रदायानुकूल श्रीवैष्णवता के साथ **'माधुर्यभावो हि रसः समग्रो'**

मधुर भाव से जीवन जीना चाहिए, क्योंकि माधुर्यभाव में ही पूर्ण रस भरा हुआ है।

आजकल के शिक्षित लोग वैदिक संस्कृति का स्वयं अनुपालन नहीं करते हुए अपने बच्चों से अपेक्षा रखते हैं, जो कठिन के साथ अशक्य भी है।

विचार करें यदि आप स्वयं चोटी (शिखा) यज्ञोपवीत नहीं धारण करेंगे, बच्चों के जन्मदिन पर केक काटेंगे तो आपकी संतानें तो इसे परम्परा मानकर अनुकरण करेंगी और आप भगवान् की दृष्टि में धर्मद्वेषी महान अपराधी के रूप में प्रस्तुत होंगे।

वेदों की आज्ञानुसार वर्ण एवं आश्रम मर्यादा में रहते हुए सनातनधर्मावलम्बी हिन्दू जीवन जीवें ।

हमारे धार्मिक अनुष्ठानों का मूल आधार : अनुराग

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित)
प्रधान संपादक- ''भारती'' संस्कृत मासिक
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)

यह एक सुविदित तथ्य है कि भारत एक आस्तिकता प्रधान देश है। आध्यात्मिकता का एक सुदीर्घ इतिहास इस देश का रहा है। आराध्य में गहरी आस्था इस देश के प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय, पन्थ, अंचल में रही है, प्रत्येक वर्ग में रही है। गत दस बारह शताब्दियों से तो इस देश में भक्ति आन्दोलन की धारा बही है उसने सारे देश को मन्दिरों में होने वाले भजन-कीर्तन, पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा आदि में सराबोर कर दिया है। भक्ति का लक्षण सर्वविदित है। परमेश्वर के प्रति, अपने आराध्य के प्रति प्रेम की भावना भक्ति का एकमात्र आधार है। भक्ति सूत्र में इसका लक्षण ही इस प्रकार किया गया है- **'सा परानुरक्तिरीश्वरे'** अर्थात्- ईश्वर में अनुराग प्रगाढ़ प्रेम ही भक्ति है। यह प्रेम सदियों से भारतीयों के हृदय में गहरा पैठा हुआ है। यह तो बात हुई आराध्य के प्रति प्रेम की किन्तु हमारे यहाँ वेदकाल से लेकर आज तक, अनेक अनेक सदियों से जीवन के जो मूल्य प्रतिपादित किए गए हैं, धर्माचरण का जो मार्ग विहित किया गया है, उसका मूल अभिगम है प्रकृति के प्रति, हमारे पर्यावरण के प्रति, हमारे जीवन में आने वाली प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम, सहिष्णुता और आत्मीयता की भावना। यही जीवन को जीने योग्य बनाती है, 'सकारात्मक' बनाती है। आप इसे इस प्रकार देख सकते हैं कि हमारे गाँव-गाँव में, नगर-नगर में जिस प्रकार मन्दिरों में भगवान् की पूजा-आराधना होती है उसी प्रकार प्रत्येक शुभकार्य में गंगा जैसी नदियों की पूजा करी जाती है। प्रसव के बाद माता गंगा का पूजन करती है। इसे 'गंगा पूजा' कहा जाता है। यह है जल पूजा, जलवा पूजन। जल हमारे जीवन का प्रमुख आधार है। इसके प्रति प्रेम हमें इसकी पूजा करने के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार पर्यावरण के प्रति प्रेम का प्रगटीकरण हम वटवृक्ष का, पीपल का, शमी वृक्ष (खेजड़ी) का तथा अन्य वृक्षों का पेजन करके करते हैं। ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन वटसावित्री व्रत महिलाओं द्वारा किया जाता है जिसमें बड़ वृक्ष की पूजा, सूत्रबन्धन आदि का विधान है। तुलसी की पूजा तो घर-घर में होती है। बिना सिंचाई के अपने बल पर फलने वाले वृक्ष शमी का पूजन दशहरे (विजयदशमी) के दिन किया जाता है। यह हमारे पर्यावरण के अनुराग का प्रतीक है। पीपल पूनो, आंवला नवमी, आदि पर्व इसी के प्रमाण हैं।

इसी प्रकार पशुओं और पक्षियों को धर्माचरण के रूप में जलदान करना, अन्नदान करना, चारा देना शास्त्रों में विहित है। गाय को माता मानकर, पूज्य मानकर उसकी सेवा, उसे भोजन-जल आदि प्रदान करना बताया गया है। श्राद्धकर्म के अंग के रूप में कौए को अन्नदान करना अत्यावश्यक माना गया है। देवताओं ने अपने वाहन के रूप में किसी यंत्र को नहीं चुना अपितु पशुओं और पक्षियों को चुना। यह उनके प्रति प्रेम का प्रतीक ही तो है। विष्णु का वाहन गरुड़ है, शिव का वाहन नन्दी बैल है, कार्तिकेय का वाहन मयूर है, दुर्गा का वाहन सिंह है। देवताओं का प्रकृति के साथ, पर्यावरण के साथ, जैव विविधता के साथ प्राणियों के साथ प्रेम का प्रतीक है, यह वाहन विधान।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है धर्म का यह सिद्धान्त जो कहता है कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--ये पाँच धर्म के आधार हैं। किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। वह आपका हित करता है तो भी ठीक है, अहित करे फिर भी हिंसा न करो। प्रेम रखो। क्षमा रखो। क्षमा का विचार सबके प्रति प्रेम का स्वरूप ही तो है। अपना हित हो या न हो, कोई अपना अहित कर दे, तो उसके प्रति क्रोध न करो। ऐसी स्थितियों में क्रोध आना स्वाभाविक है किन्तु हमारा धर्म यह विधान करता है कि उस स्थिति में भी क्रोध मत करो।

'अक्रोध' धर्म का एक आवश्यक अन्न बताया गया है। मनुस्मृति स्पष्ट करती है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, संयम, बुद्धिमानी, ज्ञान, सत्य और अक्रोध- ये दस धर्म के प्रमुख मूल्य हैं। इनमें क्षमा और अक्रोध हमें सिखाते हैं कि हमारे चारों ओर जो भी प्राणी हैं, वृक्ष हैं, पर्यावरण हैं उसके प्रति अनुराग रखोगे तो क्रोध नहीं आएगा। उनकी गलती को भी आप क्षमा कर देंगे।

ये सारे गुण सदियों से भारत की आत्मा को पवित्रता प्रदान करते आये हैं। किसी और देश में किसी और दिशा में इसके विपरीत कोई प्रेरणा, आन्दोलन आ भी जाए तो उसका प्रभाव सर्वग्राही नहीं होता, कुछ वर्गों को, कुछ समय तक वैसी हिंसा या उग्रता चाहे प्रभावित कर लें, हमारा सार्वदिक गुण अहिंसा, प्रेम, अनुराग, क्षमा और अक्रोध ही है।

INTERFAITH HARMONY AN D THE GLOBAL SOCIETY

Dr. Karan Singh
Former Member of RajyaSabha

The TIME cover-story on June 9 entitled The 'Faith of Tony Blair' raises the broader and most crucial question of the role of religion in the emerging global society. In this context, recent experience has demonstrated the extraordinary tenacity of religion in the present age. Despite being under an avowedly atheistic dictatorship in the Soviet Union for over seven decades, the moment that regime collapsed there was a remarkable upsurge of orthodox Christianity. I was in Moscow in 1990 when they were celebrating the thousandth anniversary of Christianity in Russia, and it was amazing to witness the revival of the religious impulse there. This brings to mind a dinner given for us by N.S. Khrushchev when my wife and I visited Russia as his guests way back in 1959. Over dinner I had asked him whether it was possible to be a believer as well as a member of the Communist Party of the Soviet Union. He replied immediately in the negative, saying that while they do respect individuals' religious beliefs, as far as membership of the CPSU is concerned, atheism was essential.

Similar was the case in Mongolia, where the Marxist regime had created havoc by destroying the Buddhist monasteries, burning the scriptures, torturing and killing a large number of Buddhist monks.

Yet no sooner had the regime collapsed, that the people of Mongolia began yearning for the revival of Buddhism. I visited Mongolia in 1992 and saw for myself the tremendous thirst that the people had for the revival of Buddhism. The Indian Ambassador to Ulaanbaatar happened to be a very senior Buddhist leader, the Reverend Kushok .Bakula, who not only executed his diplomatic duties but also in a way became the reviver of Buddhism. These two examples are enough to show that the religious impulse is so deeply embedded in the human psyche that despite all attempts to crush it, it has a remarkable capacity of regeneration. It is also becoming clear that as long as there are inter-religious conflicts on the planet, we are unlikely to move towards a harmonious and peaceful global society. Many, perhaps most of the current conflicts around the world today can be traced back to inter or intra-religious strife. This being the case, it is important that interfaith harmony should begin receiving at least as much attention as global warming and poverty alleviation. It is in this context that the Interfaith Movement takes on special significance. In modern times this movement can be said to have begun with the first Parliament of the World's Religions in Chicago in 1893 which brought together, for the first time, thousands of delegates from around the world representing various religious traditions. In the 20th century several international interfaith organizations came into being which, over the last century, held a whole series of interfaith gathering, small and large, around the world.

"In modern times this movement can be said to have begun with the first Parliament of the World's Religions in Chicago in 1893 which brought together, for the first time, thousands of delegates from around the world representing various religious traditions."

The point of all these meetings is by no means either to try and prove the superiority of one or other religion, far less to convert people. They are aimed at encouraging a better mutual understanding and appreciation of the fundamentals of all the great religions of the world. There are now 12 major world religions which, of course, have hundreds of subdivisions and denominations. These are the four Indic religions - Hinduism, Jainism, Buddhism and Sikhism; the three Abrahamic religions - Judaism, Christianity and Islam; the three

East-Asian religions - Confucianism, Daoism and Shintoism; Zarathustrianism, the ancient religion of the Parsees, and recently the Bahai's faith. In addition there are what are known as 'indigenous' or 'tribal' religions.

It is important to understand that the religious texts can be interpreted

in a variety of ways. One can take a single verse of the Koran to prove that this particular religion encourages violence and hatred against the non-believers, whereas in the same religion you get statements such as "wherever you turn there is a. face of God" and "for me my religion, for you yours". Similarly in Hinduism one can get caught in the intricacies of an iniquitous caste structure, whereas going back to the basic texts of Hinduism, the Upanishads, one comes across sublime utterances such as "the entire cosmos is permeated by the same divine force"; "the divine resides in the hearts of all beings"; and "the entire world is a family". The same is true in other religions, and the task before the interfaith movement is to project the universal values of these religions rather than their theological differences. An excellent example was the historic meeting held in the Cathedral of St Francis of Assisi in 1986 where Declarations on Religion and Nature were adopted on behalf of the five religions — Hinduism, Buddhism, Judaism, Christianity and Islam. Despite their theological differences, the Assisi Declaration displayed a remarkable confluence regarding how we should be interacting with the natural environment. What is really needed is that in the same way as the environmental movement moved from the periphery of global consciousness (I attended the first Conference on the Human EnvironmeAt in Stockholm in 1972 as a member of the Indian delegation) into the centre of our concerns, the Interfaith Movement should also become central to human concerns in the 21st century. Unless this happens, our quest for a sane and harmonious global society will remain a chimera.

Hymn to Shiva

I am your plaything.
You can breathe into me
the fire of eternal life,
and make me immortal;
or You can scatter my atoms
to the far corner of the universe
so that I disappear for ever.
You can fill me with light and power
so that I shine like a meteor
against the darkness of the midnight sky;
or You can extinguish my spirit
so that I sink for ever
into the deep and fathomless ocean of time.
You can set me among the eternal stars
resplendent with your divine fire;
or You can hurl me
into the abyss of darkness,
so that I can never again be visible
to mortal eyes.
You can come to me
with the glory of a thousand cupids;
or You can turn from me
and leave me stranded
in a grey and ghastly desert of despair.
You can smile at me
with the radiance that kindles the universe;
or You can open your eye of fury
and reduce me to a heap of ashes.
I am your plaything;
The choice is yours.

Sudershanalok_2022_Pages_33-47_Layout 1 13-Mar-22 11:26 AM Page 46

Scriptural Awakening

Maneeza Ahuja
Astrologer & Spiritual Counselor

Guru Maharaj used to always say, that in times gone by, many saints and yogis had done tapa in this place, where the Ashram is now situated. In this world, sacred places of worship have always been consecrated by great saints. In the beginning, there might not be recognition of the same but in due course of time the 'shakti' will make her presence felt. However, from the point of divinity these sacred places are always the same. Take for example, the Tirupati Balaji temple in South India, it is world famous. People from all parts of the world go there and ask for boons which are fulfilled and this builds their faith. Tirupati temple is also linked to the Ramanuja tradition. Similar to this is the Har Mandar or Golden Temple in Amritsar, which was built by a Guru and his legacy follows through. Undoubtedly, Shri Sidhdata Ashram is one such sacred place, where depending on the faith and devotion of people, every wish of theirs is answered, whether it relates to dharma, artha, kaama, moksha. That time is not far when this temple will build a world reputation for itself like the other divine places of worship.

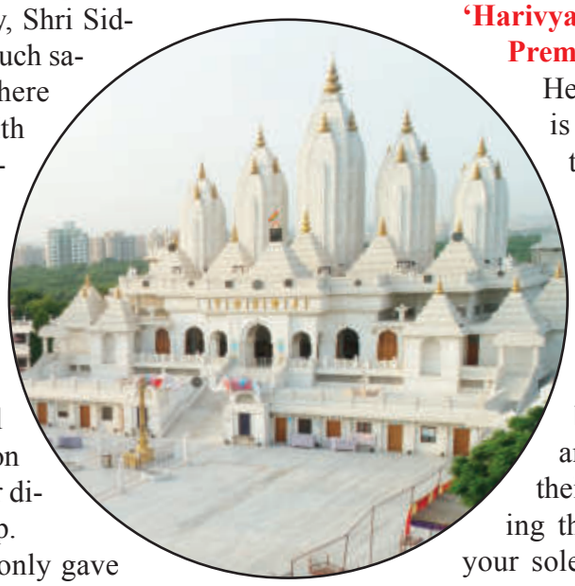

Guru Maharaj, not only gave discourses, he showed people the reality through direct experience, since truth is experiential. One believes in what one has seen or has gone through. He showed people that the divine force was present in the idols of the deities one worshipped. The idol one worships, offers food or flowers to, does japa or dhyana on, the divine being blesses the person in that very form. So there is the form and the formless, both lead a person to the same destination.

> ***"One must remember that worldly desires are important but they cannot be the sole focus of a person. Materialistic desires can be asked for, for satisfaction of these desires will lead to a spiritual journey, and not the other way round, where spiritual practices are picked up to satisfy worldly needs."***

Guru Maharaj often uttered the following verse…

'Harivyapak sarvatrasamana
Prem se prakat hoyi main jana'

He used to say that the divine being is omnipresent. He is revealed through love and devotion.

When the element of the divine being is realized at the anhada chakra or in the heart, it leads to the persons final emancipation or liberation. Going to pilgrimages with full devotion, being in the company of saints and following and adhering to their advice or guidance, and making the realization of the Lord God your sole motive, doing bhajan, kirtan, singing his praise, his glory will surely lead to the revelation and realization of the tatwa or element of the divine being.

What is required is unswerving faith and conviction. The speech of the Lord God as mentioned in the Geeta, or what has been said by great saints should always be taken as the ultimate truth. One must remember that worldly desires are important but they cannot be the sole focus of a person. Materialistic desires can be asked for, for satisfaction

of these desires will lead to a spiritual journey, and not the other way round, where spiritual practices are picked up to satisfy worldly needs. It is akin to using the philosophers stone to grind cereal. One would be a fool to use spiritual merit for material gains. One's sole aim should be the revelation and the realization of the divine.

He said, the one who is an atheist will also reap the results of his karma and so will the believer. But the blessings of the divine can erase the bad from the life scheme of the believer. And more importantly because the believer depends wholly solely on the divine, it is easy for him to go through pain or suffering. His faith serves as the boat which takes him across the misery of human birth.

Nobody should come to this sacred place with a negative mindset or bad intentions. In this place one should be of pure heart and countenance. There are many examples where people have kept an inimical feeling towards this sacred place and they have been razed to the ground. This sacred place is kind but it can be harsh too.

I have been coming to the Ashram since 2012, every time I have had the good fortune of paying my respects to Guruji, Purushottam Acharya ji, he has always given a spiritually emancipating message. Once when he was citing the power of devotion and complete surrender, he explained the beautiful story of Narayan avtaar Narsimha bhagwan in a different context.

He said there are many avtaars of Narayan, and each avtaar had incarnated for a reason, while the larger cause of reinstating the balance of dharma remained. For example, Varaha Avtaar for rescuing mother earth, submerged in the waters after she was taken to the rasatala, the second lowest world by a demon, Parshuram avatar for annihilating the kshatriyas after they started mass exploitation of their subjects. Rama avtaar for establishing moral values or dharma. But it is only the Narsimha avtaar who appeared for the sake of his devotee. Such was the devotion of bhakta Prahlaad that the Divine Godhead himself appeared in the fierce form of Narsimha, half lion, half human, to save him from Hiranyakashipu, his own father who was bent on killing Prahalaad, because Prahlaad was a devotee of Shri Hari or Lord Narayan. Narsimha avtaar is an avataar who appeared for the protection of his bhakta.

Bhaktashiromani Prahlaad, whose devotion was supreme. For devotion begets devotion. For that reason the Lord God himself transcended time and space to protect his devotee.

Not to forget my own miraculous recovery, I suffered a paralytic attack in October 2015 and through MRI reports it was diagnosed as a blood clot in my spinal chord. The doctors prescribed a high risk surgery. The clot was in the cervical area, wherein a lot of nerve clusters were linked to the lower brain. On the 16th of February 2016, I was taken into the operation theatre and just before the operation the head neuro surgeon decided to take a final scan of the clot. This was at Paras Hospital Gurgaon. And to the doctors absolute surprise, the clot had disappeared. The technicians while doing the scan asked my father for previous reports just to ascertain the position of the clot, which they could not locate this time. What can I say about the miracles of this place, I have experienced them myself.

Divinity prevails in this Ashram. The pivotal force behind the building of this ashram and temple is the command of the divine. A sidha Guru has put in his effort, his shakti in building this place of worship. People have put in their hard earned honest money in the construction of this temple, while they immersed themselves in karseva. When the place was dug up during construction, such artifacts and articles were found which left no doubt in the minds of people that this was a place where yogis have done tapa or deep penance. The fact is that this full kshetra or area is indeed a tapasthali. The other miraculous thing, is that many people have had a divine vision here, they have seen various deities, in form, moving about this place. Guru Maharaj, always said that the ashram housed very potent energies. Various devotees have themselves been witness to innumerable miracles. Another very significant point was that Baba Farid had himself proposed his cooperation to Guru Maharaj for building this temple. Baba Farid, is the peer or seer under whose name this city, Faridabad, was established, post Mughal rule. To honor the great seer, who was indeed powerful, Guru Maharaj had offered a chaddar on the grave shrine of this Sufi Saint.

We are privileged to be close to a shrine where blessings abound.

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 48

न्यूजीलैंड में भी गुरुजी के शिष्यों की बड़ी तादाद है।

गुरु गद्दी, डर्बन (साऊथ अफ्रीका)

जोहानिसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में गुरुजी के दरबार में नियमित रूप से भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है।

हांगकांग गद्दी पर नियमित रूप से धार्मिक उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 49

वसुधैव कुटुम्बकम्

जो जितना ज्यादा भौतिक है, वह उतना ज्यादा परेशान है। इस बात को पढ़े लिखे लोग समझते हैं। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की पूछ दुनिया भर के देशों में तेजी से बढ़ रही है। हमारे अध्यात्मिक ज्ञान की चाहत तो विदेशियों में पहले से रही है। भारत के हरियाणा प्रांत स्थित फरीदाबाद जिले में श्री सिद्धदाता आश्रम दुनिया भर के भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। इसके साथ ही आश्रम की शाखाएं दुनिया भर के देशों में भी स्थापित हो रही हैं। इन स्थानों पर हमारे परम पूज्य गुरुमहाराज स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी की शिक्षाओं का गुणानुवाद हो रहा है। धर्म मनीषियों का मत है कि भारत पुनः विश्वगुरु होगा। हमारे पीठाधिपति अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में हम न केवल अध्यात्म को सीख रहे हैं बल्कि सिखा भी रहे हैं। आप भी देखें और जुड़ें हमारे संयुक्त अरब अमीरात के दुबई, नाइजीरिया के लागोस व कानो, दक्षिण अफ्रीका के डरबन व जोहानिसबर्ग, हांगकांग, स्पेन में टेनेरिफ व एलिकांटे, न्यूजीलैंड में लिंकन व क्राइस्ट चर्च आदि जगहों पर स्थित केंद्रों के साथ...

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर (दुबई) यूएई।

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, विक्टोरिया आईसलैंड (लगोस, नाईजीरिा)

भौतिकवाद के स्याह अंधेरे के बीच अध्यात्मिकवाद की लौ है दिव्यधाम

फरीदाबाद से होकर गुजरने वाली अरावली पर्वत माला के ऐतिहासिक एवं पौराणिक रूप से जाने जाते क्षेत्र में स्थित आध्यात्मिक और धार्मिक केंद्र श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) की दिव्यता अनिर्वचनीय, अद्भुत एवं कल्पना से परे है।

हमारे वैकुंठवासी गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी ने वर्ष 1989 में फरीदाबाद की अरावली पर्वत श्रृंखला अंतर्गत व्यास पहाड़ी पर श्री सिद्धदाता आश्रम की नींव रखी थी।

इस स्थान के स्थान पीछे भी एक चमत्कारिक घटना जुड़ी है। एक बार जब श्री गुरु महाराज जी सूरजकुंड बड़खल मार्ग से कहीं जा रहे थे, तब उन्होंने यहां पानी का एक स्रोत देखा। उसी रात, उनके ईष्ट देव ने आदेश दिया कि जहां पानी का स्रोत देखा था, वहीं मेरा स्थान बनाओ। इस आदेश को शिरोधार्य कर श्री गुरु महाराज जी ने प्राचीन काल में ऋषि परशुराम, ऋषि व्यास और ऋषि पाराशर सहित पांडवों और उनकी मां कुंती के साथ जुड़े रहे इस स्थान का चयन किया।

दिव्य आदेश के तहत निर्मित आश्रम परिसर में वर्ष 1996 की विजयादशमी (दशहरा) के दिन श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। श्री गुरु महाराज जी के अथक प्रयासों और भक्तों की सेवा से चार साल की अल्प अवधि में ही मंदिर के बुनियादी ढांचे और भवन का अधिकांश निर्माण संपन्न हो गया। हालांकि इस भव्य दिव्यधाम को और भव्यता देने एवं सौंदर्यीकरण करने में छह साल का और समय लग गया। इस प्रकार 23 अप्रैल 2007 को यह जनता के लिए खोल दिया गया।

श्री गुरुमहाराज जी कहते थे कि यह पवित्र स्थान दिव्य महासागर के मंथन से प्रकट हुई दिव्य गौ कामधेनु के समान ही है। इस दिव्यधाम पर विश्वास रखो, यह आपको ऐसे परिपूर्ण करता है जैसे मां अन्नपूर्णा सभी को पौष्टिकता से परिपूर्ण भोजन प्रदान कर तृप्त करती हैं। हम अनेक व्यक्तियों के अनुभवों के आधार पर यह कह सकते हैं कि कल्पवृक्ष रूपी श्री सिद्धदाता आश्रम में आने वाला कभी खाली हाथ नहीं जाता है। गुरु महाराज हमेशा कहते कि श्री सिद्धदाता आश्रम सिद्धों को भी देने वाला है और हम बाबा के एक एक शब्द के अनुभवी एवं साक्षी हैं। आपका स्वागत है!

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 51

स्वस्थ शरीर ही धर्म को निबाह सकता है

हमारे पीठाधिपति अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का कहना है कि कोई भी व्यक्ति स्वस्थ होने पर ही धर्म को निबाह सकता है। स्वस्थ्य व्यक्ति ही सेवा भी कर उनके निर्देश पर आश्रम परिसर में एक निशुल्क डिस्पेंसरी का संचालन हो रहा है। इसके साथ ही समय समय पर अनेक स्वास्थ्य जांच शिविरों, मोतियाबिंद जांच एवं ऑपरेशन शिविरों आदि का आयोजन किया जाता है। जिससे लाखों की संख्या में लोग लाभ ले रहे हैं।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 52

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 53

संस्कृत से ही अक्षुण्ण रहेगी संस्कृति

ऐसा माना जाता है कि अनुवाद कितना भी संभल कर किया जाए लेकिन पूर्ण नहीं हो पाता है। इसलिए किसी भी ग्रंथ की भावना को सही रूप में समझने के लिए उसकी असली भाषा में ही समझना चाहिए। हमारे सनातन धर्म के अधिकांश धार्मिक ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। जबकि संस्कृत इन दिनों में लोग भूलते जा रहे हैं। इस भाषा को समकालीन बनाए रखने के लिए श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय का संचालन किया जा रहा है। जिसमें सभी छात्रों को निःशुल्क आवास और बोर्डिंग के साथ पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस महाविद्यालय का केंद्र वैदिक ग्रंथों, पुराण, साहित्य, व्याकरण, कर्मकांड (अनुष्ठान प्रथा), ज्योतिष और धर्मशास्त्र आदि विषय हैं। वहीं हिंदी, अंग्रेजी, गणित, कंप्यूटर एवं विज्ञान की जानकारी भी दी जाती है। वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने महाविद्यालय को शास्त्री स्तर तक मान्यता प्रदान की है।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 54

पुस्तकें ज्ञान की केंद्र हैं

हजारों वर्षों पुराने ज्ञान को सहेजने के लिए पुस्तकों से अच्छा और कोई माध्यम नहीं हो सकता है। व्यक्ति मिट जाते हैं लेकिन ज्ञान पुस्तकों में बना रहता है। दिव्यधाम परिसर में परम कृपालु श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने स्वामी सुदर्शनाचार्य पुस्तकालय की स्थापना की है, जिसमें सभी प्रमुख संप्रदायों के आध्यात्मिक ग्रंथ, पुराण सहित सकल धार्मिक ज्ञान से ओतप्रोत 12000 पुस्तकों को संकलित किया गया है। इनमें वैदिक विषयक ग्रंथ, भारतीय दर्शन, वेद, पुराण और उपनिषद आदि संकलित हैं। पुस्तकालय में न केवल वैष्णव धर्म से संबंधित ग्रंथों, बल्कि शैव और साक्त दर्शन सहित अन्य मतों एवं संतों के ज्ञान को प्रदान करने वाली पुस्तकों को भी संकलित किया गया है।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 55

मां अन्नपूर्णा की कृपा का केंद्र

श्री गुरु महाराज जी की कृपा और उदारता से श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्थापित एवं संचालित अन्नपूर्णा रसोई असंख्य जन को उदरपूर्ति करवा रही है। यहां प्रतिदिन आश्रम में आने वाले भक्तों के लिए भोजन प्रसादम तैयार होता है। यहां आने वाला कोई भक्त भूखा या प्यासा वापिस नहीं जाता। यह रसोई सभी को महाप्रसाद प्रदान करती है। बाबा कहते थे कि यह भोजन प्रसाद ही तुम्हारे संकटों को काटने की दवा है। अन्नपूर्णा रसोई का प्रसाद पाकर भक्त का जीवन पोषित होने लगता है। इस रसोई में रोजाना हजारों की संख्या में भक्तों को भोजन प्रसाद वितरित किया जाता है। यहां एक पंक्ति में एक साथ बैठकर प्रसाद प्राप्त करते भक्त समता का बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 56

बाबा से जुड़ी स्मृतियों का प्रमुख केंद्र

श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुंठवासी गुरु महाराज का समाधि स्थल स्मृति स्थल के रूप में स्थापित है। यह यहां आने वाले भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में आने वाले भक्त यहां समाधि पर माथा टेकना नहीं भूलते। यहां सुंदर फल और फूल देने वाले पेड़ लगाए गए हैं। जिससे यहां की सुवास विशिष्ट लगती है। यहां प्राकृतिक वातावरण में बाबा की मनोरम छवियां मन में बनती हैं। यहीं बाबा की याद में संयोजित स्थापित एक सुंदर संग्रहालय भी है। जिसमें बाबा के शारीरिक जीवन में प्रयोग वस्तुओं को दर्शनार्थ रखा गया है।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 58

जनकल्याणकारी गतिविधियां

अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन एवं उनकी ही कृपा से सेवाभावी भक्त अनेक सेवा प्रकल्पों को संपन्न करते हैं। गत वर्ष इन सेवा प्रकल्पों में नित्य होने वाले हवन, पौध रोपण, जरूरतमंदों को कंबल, शॉल आदि का वितरण, साफ-सफाई अभियान, जरूरतमंदों को भोजन, ग्रीष्म ऋतु में मीठे पानी की छबीलों का आयोजन, स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन आदि ऐसे अनेक सेवा प्रकल्प हैं। जिनके माध्यम से नर रूप में ही नारायण की सेवा हो रही है।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 60

महामारी में सेवा को मिला सम्मान

महामारी के रूप में हमारे सामने आए संकट कोरोना काल में श्री सिद्धदता आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में प्रतिदिन भोजन के पैकेट्स बंटवाए जिससे लाखों की संख्या में लोग लाभान्वित हुए। इसके अलावा आश्रम की ओर से पीएम रिलीफ फंड और सीएम हरियाणा रिलीफ फंड की सहायतार्थ लाखों रुपयों की राशि प्रदान की गई। जिसकी शासन एवं प्रशासन द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई और आश्रम को पुरस्कृत किया गया।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:45 AM Page 61

जरूरतमंदों की सेवा

श्री सिद्धदाता आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में प्रतिदिन जरूरतमंदों की सेवा के अनेक प्रकल्प चल रहे हैं। इन प्रकल्पों में सर्दी की ठिठुरती रातों में खुले आसमान के नीचे जीवन जीने को मजबूर लोगों को गर्म कपड़े, कंबल आदि प्रदान करना भी प्रमुख रूप से शामिल है। इसमें स्वयं श्री गुरु महाराज जी ने एवं स्वयंसेवकों के माध्यम से भी गर्म कपड़े एवं कंबल आदि का वितरण करवाया।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 62

गावो विश्वस्य मातरः

अपने विशिष्ट गुणों के कारण गौ माता को संसार की मां कहा गया है। इसी रीति में श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है जिसे श्री नारायण गौशाला का नाम दिया गया है। यहां 300 से अधिक गौधन है। श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज की कृपा से इस वर्ष गीर नस्ल की देशी गायों को बड़ी संख्या में गौशाला में शामिल किया गया। श्री गुरु महाराज स्वयं गौशाला कर विशेष ध्यान रखते हैं। गौशाला से प्राप्त समस्त द्रव्य का उपयोग आश्रम में ही किया जाता है और इसका किसी प्रकार का वाणिज्यिक प्रयोग नहीं किया जाता है। वह कहते हैं कि गौ में समस्त देवताओं का वास है, इसलिए सभी को गौधन की सेवा करनी चाहिए।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 63

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा। दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति गुरुपुत्रके।। अर्थात् जिसके मुख में गुरुमंत्र है उसके सब कर्म सिद्ध होते हैं, दूसरे के नहीं। दीक्षा के कारण शिष्य के सर्व कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इस वाणी को श्रीरामानुज संप्रदाय में स्थापित करने वाले भाष्यकार रामानुज स्वामी जी की परंपरा में आने वाले श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज वैदिक रीति से नामदान देते हैं। इसके लिए आश्रम हर वर्ष अनेक शिविरों का आयोजन करता है जिसमें शामिल भक्तों को तप्त चक्रांकन के माध्यम से शंख एवं चक्र लगाकर और हवन, यज्ञोपवीत व शरणागति महत्वपूर्ण अंगों को पूर्ण करवाया जाता है। श्री गुरु महाराज स्वयं भक्तों के कान में नाम देकर उनकी मुक्ति की राह सरल बनाते हैं। जिसे मानने वालों की संख्या लाखों में है।

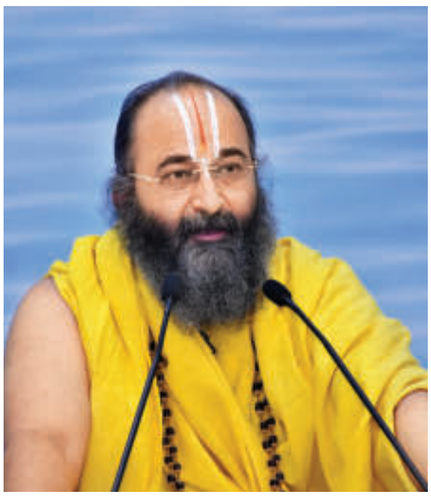

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 64

नवीकरणीय ऊर्जा ही भविष्य की ऊर्जा है

सभी जानते हैं कि ऊर्जा के सीमित स्रोतों के बीच दुनिया की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जिससे नए ऊर्जा स्रोतों को ढूंढना और उनका उपयोग बेहद आवश्यक है। इसी दिशा में श्री गुरु महाराज के निर्देश पर श्री सिद्धदाता आश्रम में सौर ऊर्जा प्लांट लगाया गया है। जो आश्रम की ऊर्जा का बहुत बड़े हिस्से की पूर्ति कर पाने में सक्षम है। शासन प्रशासन की ओर से बड़े संस्थानों से इस बारे में निरंतर अपील की जा रही हैं लेकिन यह कार्य बहुत धीमी गति से चल रहा है। वहीं आश्रम ने अपनी ओर से सौर ऊर्जा प्लांट लगाकर बड़ी पहल की है। जिससे अनेक लोग प्रभावित होकर अनुसरण कर सकते हैं। श्री गुरु महाराज कहते हैं कि हमें शब्द भी सोच समझकर प्रयोग करने चाहिए, यह तो ऊर्जा है। ऊर्जा को उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, इसे केवल एक तरह से दूसरी तरह में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए ऊर्जा का सोच समझकर ही प्रयोग करना चाहिए।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का रिबन काटकर शुभारंभ करते पूज्य गुरुदेव जी व अन्य।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का विहंगम दृश्य।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 66

आरएएफ के आइजी श्री आरएम मीणा जी।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 67

श्री सिद्धदाता आश्रम का हरिद्वार कुंभ शिविर

वर्ष 2021 में आयोजित हरिद्वार महाकुंभ में अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देश एवं सान्निध्य में श्री सिद्धदाता आश्रम का भी शिविर लगाया गया। श्री गुरु महाराज के अनुसार हिंदू धर्म में कुंभ स्नान का महत्व बेहद विशेष बताया गया है। मान्यता है कि अगर व्यक्ति कुंभ स्नान करता है तो उसके सभी पाप समाप्त हो जाते हैं और उसे पापों से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। हिंदू धर्म में पितृ का बहुत महत्व है। ऐसे में कहा जाता है कि अगर कुंभ स्नान किया जाए तो इससे पितृ भी शांत हो जाते हैं। इससे व्यक्ति पर आशीर्वाद बना रहता है। शिविर में नित्य हवन, भजन, प्रवचन, भंडारा, दान आदि के क्रम के मध्य श्री गुरु महाराज जी के साथ अनेकानेक संतों, भक्तों का मिलने का क्रम रहा। बड़ी संख्या में कुंभ में पहुंचने वाले भक्तों ने यहां आश्रय एवं भोजन प्राप्त किया और सेवा व्यवस्था की प्रशंसा की।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 68

हरि की पौड़ी पर गंगा मैया में आस्था की डुबकी लगा प.पू. श्री गुरु महाराज जी।

स्वामी संपूर्णानंद ब्रह्मचारी जी महाराज (पंच अग्नि अखाड़ा)।

हनुमान दास जी महाराज (कथावाचक)।

स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज।

कल्याणकारी बाबा जी महाराज।

श्री लक्ष्मी प्रपन्नाचार्य जीयर स्वामी जी महाराज (बक्सर बिहार)।

महामंडलेश्वर सर्वेशानन्द सरस्वती जी महाराज।

श्री रमेश कौशिक, भाजपा संसद (हरियाणा), ओम प्रकाश शर्मा जी व अन्य।

श्री नीलेश आनंद भरणे जी (पुलिस उप महानिरीक्षक कानून व्यवस्था) उत्तराखंड पुलिस।

श्री सतपाल जी महाराज (कैबिनेट मंत्री उत्तराखंड सरकार) संग स्वामी संपूर्णानंद जी महाराज (पंच अग्नि अखाड़ा)।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 71

जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अनंत श्री विभूषित स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज।

श्री महंत बापू मुक्तानंद ब्रह्मचारी जी महाराज (सभापति अग्नि अखाड़ा), स्वामी संपूर्णानंद जी महाराज (पंच अग्नि अखाड़ा) संग स्वामी मुकुंदानंद जी महाराज।

शंकाराचार्य काशी पीठाधीश्वर, स्वामी शाश्वतानंद सरस्वती जी महाराज (उत्तराखंड हिमालय, बद्रिका आश्रम)।

शंकराचार्य काशी पीठाधीश्वर, स्वामी शाश्वतानंद सरस्वती जी महाराज (उत्तराखंड हिमालय, बद्रिका आश्रम)।

जयराम आश्रम हरिद्वार के महामंडलेश्वर ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज।

ज़ गु.रा. स्वामी श्री श्याम नारायणाचार्य जी महाराज (अध्यक्षः आचार्य बेला इंडिया टेंपल, हरिद्वार), ज़ गु.रा. सूर्यनारायणाचार्य जी महाराज (अयोध्या)।

Sudershanalok_2022_Pages_48-73_sudershanalok 2020 13-Mar-22 11:46 AM Page 72

हरिद्वार कुम्भ प्रवास से लौटते समय श्री गुरु महाराज जी ने हरी चैतन्य ब्रह्मचारी जी महाराज, अमेठी (यूपी) से शिष्टाचार भेंट कर कुशलक्षेम जाना।

हरिद्वार कुम्भ प्रवास से लौटते समय श्री गुरु महाराज जी (अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज) ने योगगुरु बाबा रामदेव जी के योगग्राम आवास पर शिष्टाचार भेंट के लिए पहुंचे। जहां बाबा रामदेव जी ने गुरुजी का पूर्ण आदर सत्कार किया।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:49 AM Page 74

संतों के संग लाग रे...

श्री रामानुज संप्रदाय की उत्तर भारत में ख्याति का प्रमुख केंद्र हरियाणा के फरीदाबाद स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्ष पर्यंत अति विशिष्ट अतिथियों का निरंतर आवागमन होता है। वह अनंतश्री विभूषित श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ धर्म, दर्शन, समाज पर चर्चाएं करते हैं वहीं अपने जीवन के अनसुलझे पहलुओं को भी सुलझाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव के निर्देश अनुसार आश्रम की व्यवस्था हर आने वाले के स्वागत की प्रेरणा देती है। अपने घर आए मेहमान का स्वागत सत्कार एक सुसंस्कृत व्यक्ति के लक्षण कहे जाते हैं। आपके समक्ष हम बीते वर्ष यहां पहुंचे विशिष्ट, अतिविशिष्ट अतिथियों में से कुछ महानुभावों के छायाचित्र संकलित कर प्रस्तुत कर रहे हैं। आप भी अतिथि के आतिथ्य का गुण स्वयं में अर्जित एवं संयोजित करिए। गुरु भगवान आप पर कृपा करें।

केंद्र सरकार के राष्ट्रीय राजमार्ग एवं सड़क परिवहन मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री अमित कुमार घोष जी सपरिवार श्री गुरु महाराज जी जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज जी के सान्निध्य में श्री अनुभव मिश्रा जी (न्यायाधीश) संग श्री विशाल जी (सीजेएम, नूंह)।

श्री गुरु महाराज जी से प्रसाद प्राप्त करते वरिष्ठ सर्जन डॉक्टर श्री विवेक गुप्ता जी।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:49 AM Page 75

पूज्य गुरुदेव को राखी बांधने श्री सिद्धदाता आश्रम पहुंची ब्रह्मकुमारी केंद्र सेक्टर 46 की इंचार्ज बहन बीके मधु जी, अग्नि अखाड़े की साध्वी शकुंतला जी, पूर्व पुलिस अधिकारी आशा कुमारी व अन्य।

श्री गुरु महाराज जी के सान्निध्य में पहुंचे न्यायाधीश श्री पीयूष पांडे जी परिवार सहित।

श्री गुरु महाराज जी से प्रसाद प्राप्त करते अनुभव शर्मा जी एवं शिक्षाविद श्री आरपी मिश्रा जी।

श्री गुरु महाराज जी से परिवार सहित आशीर्वाद लेने पहुंचे वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अशोक शर्मा जी।

श्री गुरु महाराज जी के सान्निध्य में सपरिवार पहुंचे भाजपा हरियाणा प्रदेश के महासचिव श्री संदीप जोशी जी।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते शिक्षाविद श्री आशुतोष मिश्रा जी संग पत्नी न्यायाधीश वर्षा शर्मा जी।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:49 AM Page 76

श्री दिनेश शास्त्री जी (निदेशक, संस्कृत अकेडमी हरियाणा) भी पहुंचे श्री गुरु महाराज के दरबार।

गुरुजी के गृहजिले से आए सांसद (करौली धौलपुर राजस्थान) डॉ मनोज राजोरिया जी।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हिन्दुस्तान अखबार के संपादक कुणाल वर्मा जी।

श्री गुरुदेव संग श्री नवदीप नैन (एमसीएफ ज्वाइंट कमिश्नर) एवं एसडीएम बड़खल श्री पंकज सेतिया जी।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते भाजपा विधायक श्री राजेश नागर जी।

पूर्व पर्यावरण मंत्री हरियाणा श्री विपुल गोयल जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

परमपूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद एवं प्रसाद प्राप्त करने प्रयागराज से पहुंचे श्री देवानंद त्रिपाठी जी व अन्य।

पूज्य गुरुजी संग प्रसून शुक्ला जी (वरिष्ठ पत्रकार व ह्यूमन राइट एक्टिविस्ट)।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:49 AM Page 77

श्री गुरुदेव की कृपा प्राप्त करने पहुंचे श्री अमरेंद्र प्रताप सिंह (संयुक्त निदेशक, ग्रामीण विकास मंत्रालय) भारत सरकार।

न्यायाधीश श्री अनुभव मिश्रा जी परिवार सहित श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेने पहुंचे।

पूर्व आईजी हरियाणा पुलिस श्री सुभाष यादव जी श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेने पहुंचे सेवा भारती हरियाणा के अध्यक्ष श्री देव प्रसाद भारद्वाज जी व अन्य।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते भारतीय जनता पार्टी हरियाणा प्रदेश के नवनियुक्त संगठन महासचिव श्री रविन्द्र राजू जी साथ में विधायिका श्रीमती सीमा त्रिखा जी, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी व अन्य।

श्री गुरु महाराज से सपत्नीक आशीर्वाद प्राप्त करते कांग्रेस विधायक श्री नीरज शर्मा जी।

श्री गुरु महाराज संग पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से आये श्री सुधीर दहिया जी व अन्य।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 78

श्री गुरु महाराज संग विश्व हिंदू परिषद के उत्तर क्षेत्र संपर्क प्रमुख श्री रास बिहारी जी।

श्री मनोज ध्यानी जी (पुलिस उप महानिरीक्षक) केंद्रीय पुलिस बल सहपत्नि श्री गुरुजी का आशीर्वाद लेने पहुंचे।

श्री शैव परंपरा के महंत श्री कैलाशनाथ हठयोगी जी व उनके साथ श्री प्रकाश मिश्रा जी (मातृ भूमि सेवा मिशन) कुरुक्षेत्र, रामपाल आर्य जी ।

भाजपा विधायिका श्रीमती सीमा त्रिखा जी, पति एडवोकेट श्री अश्विनी त्रिखा जी संग बेटी दिशा त्रिखा।

श्री गुरु महाराज जी संग बाबा रामदेव के शिष्य श्री कृष्णवीर शर्मा जी सपत्नीक।

श्री गुरु महाराज जी संग भागवत प्रवक्ता अनिल कुमार शास्त्री जी, शिक्षाविद श्री पीसी तिवारी जी।

डॉ. जगन्नाथ पटनायक जी (वाईस चांसलर सिक्किम एजुकेशन एंड रिफॉर्म कमीशन) साथ में दीपक राव जी।

इसरो (अंतरिक्ष विभाग भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) के निदेशक डॉ एस वी शर्मा जी।

जगदगुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज से प्रसाद प्राप्त करते वास्तुविद श्री रवि राव जी।

पूज्य गुरुजी संग विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं हरियाणा अध्यक्ष श्री रमेश गुप्ता जी व अन्य।

तहसीलदार श्री यशवंत सिंह जी अपनी धर्मपत्नी सहित पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे।

आईएएस श्री संजय गर्ग जी की धर्मपत्नी एवं बेटी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री श्री मूलचंद शर्मा जी परमपूज्य गुरुदेव को शॉल ओढ़ाते हुए।

परमपूज्य गुरुदेव फरीदाबाद की तहसीलदार श्रीमति नेहा सरन जी को प्रसाद प्रदान करते हुए।

मानव रचना विश्वविद्यालय के चेयरमैन श्री प्रशांत भल्ला जी श्री गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे।

देश की पहली अर्जुन अवार्डी महिला पहलवान व डीएसपी हिसार सुश्री गीतिका जाखड़ जी प्रसाद प्राप्त करते हुए।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:31 PM Page 80

भाजपा नेता किशन ठाकुर जी परम पूज्य श्री गुरुदेव महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

सीआरपीएफ के डीआईजी श्री जयदेव केसरी जी परिवार सहित पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

श्री मणि प्रसाद मिश्रा जी (पूर्व प्रशासनिक अधिकारी) पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

जगदगुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में श्रीमती मंजुला मल्होत्रा जी।

पूज्य गुरुदेव जी से सपरिवार आशीर्वाद प्राप्त करतीं न्यायाधीश यशिका यादव, समाजिक कार्यकर्ता रितु झिंगन व अन्य।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री नन्द किशोर गुर्जर जी (विधायक) लोनी गाजियाबाद।

नेपाल से आयीं कथा मंजरी राधिका दासी जी व साथ में कांग्रेस नेता मुनेश शर्मा जी व अन्य।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 81

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगदगुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज से सपरिवार आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे दिल्ली सरकार में प्रमुख सचिव आईएएस श्री राजीव रघुवंशी जी।

प.पू. गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे श्री राजू भार्गव जी (एडीजीपी) सीआरपीएफ।

श्री रासबिहारी सिंह जी (पुलिस उप महानिरीक्षक) ग्रुप केंद्र ग्रेटर नोएडा संग धीज कुमार सिंह (द्वितीय कमांड अधिकारी) सीआरपीएफ।

विश्व हिंदू परिषद के उत्तर क्षेत्र संपर्क प्रमुख श्री रास बिहारी जी, विभाग संगठन मंत्री श्री साहिल वालिया जी एवं विशेष संपर्क प्रमुख श्री विपिन गोयल जी।

पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री समीर चौगांवकर व साथ में विजय शंकर मिश्रा जी।

आईएएस श्री संजय गर्ग जी सपत्नीक पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

श्री शैव परंपरा के महंत श्री कैलाशनाथ हठयोगी जी श्री गुरुमहाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 82

श्री गुरुजी संग एडिशनल सोलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया श्री आत्माराम नाड़करनी जी एवं अनुभव मिश्रा जी।

पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते पूर्व कांग्रेस विधायक श्री ललित नागर जी व अन्य।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते मुंबई से आये गुरुभक्त विनोद साहनी जी।

श्री गुरु महाराज जी के सान्निध्य में सहपत्नी पहुंचे न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र शर्मा जी।

पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करते साऊथ अफ्रीका से आये गुरुभक्त अनूप कैहर जी।

परम पूज्य गुरुदेव जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते गुरुभक्त श्री पुरुषोत्तम नथानी जी, श्री सतपाल शर्मा जी, श्री पवन शर्मा जी, श्री नितिन गौसाईं जी।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:33 PM Page 83

तत्वदर्शी विभूतियों का मिलन

साधारण व्यक्ति को जब तत्वदर्शी महापुरुषों की संगति प्राप्त होती है तब उन्हें परमपिता परमात्मा की याद आती है। इसी को सतसंगति कहा गया है। लेकिन जब तत्वदर्शी विभूतियों का मिलन होता है तब मानव के लिए विशेष आयोजन होता है। बीते वर्ष श्री सिद्धदाता आश्रम व आश्रम के बाहर कार्यक्रमों में श्री गुरुमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जीमहाराज की अनेक सन्त-महात्माओं के साथ भेंट व धर्म चर्चा हुई।

श्रीश्रीश्री त्रिदंडी अहोबिल रामानुज जीयर स्वामीजी से शिष्टाचार भेंट करते परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज।

जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज।

वृन्दावन के बड़ा खटला स्थित श्री वरदराज कुंज के अधिपति स्वामी श्री रामेश्वराचार्य जी महाराज।

पंचकुला से आए पंच अग्नि अखाड़ा के सचिव स्वामी संपूर्णानंद जी ब्रह्मचारी महाराज।

श्रीरामशरणम संस्था पटियाला (पंजाब) से आए स्वामी नलिनानंद गिरी जी महाराज।

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 84

1

2

3

4

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 85

जहां जहां पड़े चरण संतन के

सदगुरुदेव अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज आश्रम से बाहर भी अनेक कार्यक्रमों के क्रम में सम्मिलित हुए। प्रस्तुत है एक बानगी 1- राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी, 2- इंडिया टीवी के एडिटर श्री रजत शर्मा जी 3- वरिष्ठ पत्रकार श्री हेमंत शर्मा जी 4- राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी। 5- देश के रक्षा मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी। 6- श्री भूपेंद्र यादव जी (केंद्रीय पर्यावरण मंत्री), 7- हरियाणा से राज्यसभा सांसद श्री अनिल जैन जी, 8- मुरलीधर राव जी (मध्यप्रदेश प्रभारी, भाजपा)। 9- यूफ्लैक्स के सीईओ श्री अशोक चतुर्वेदी जी एवं गारगोटी संग्रहालय के सीएमडी श्री केसी पांडे जी।

5

6

7

8

9

खुशी मनाओ, मंगल बेला आई

परम पूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के जन्मोत्सव पर्व और ग्रेगेरियन नववर्ष 2022 के स्वागत के लिए श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में विशाल समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तों ने पहुचंकर श्री गुरुमहाराज को जन्मोत्सव की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और स्वयं भी नववर्ष के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवजी ने भी दिन का प्रारंभ श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी एवं अन्य देव विग्रहों के समक्ष अर्चना कर एवं स्मृति स्थल पर वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की समाधि पर लोककल्याण के लिए प्रार्थना से की।

पूज्य गुरुदेव जी का जन्मोत्सव एवं नववर्ष उत्सव, 01 जनवरी, 2021

स्मृति स्थल
(प्रस्तावित)

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:50 AM Page 89

श्री गुरुजी ने खेली प्रेम की होली

हमारे पीठाधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम में भगवान श्री लक्ष्मीनारायण, देव विग्रहों एवं वैकुंठवासी गुरु महाराज और भक्तों संग फूलों की होली खेली। उन्होंने सभी को स्नेह स्वरूप प्रवचन एवं आशीष और प्रसाद प्रदान किया। इस अवसर पर कोरोना काल की नियमावली को मानते हुए सभी कार्यक्रम संपन्न हुए। आश्रम में सबसे पहले हवन किया गया और उसके बाद अन्य कार्यक्रम विधिवत आयोजित हुए।

- होली 28 मार्च, 2021

मर्यादा में मना पुरुषोत्तम भगवान का जन्मोत्सव

भगवान के समस्त अवतारों में मर्यादा के लिए पूजे जाने वाले पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी महाराज का जन्मोत्सव कार्यक्रम श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में सविधि और मर्यादा में मनाया गया। परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में भगवान श्रीराम जी के श्रीविग्रह पर सविधि पूजन किया गया। इस अवसर पर अर्चक, भक्त , सेवादार एवं आश्रम कार्यकारिणी के सदस्यों ने मर्यादा में रहने का विशेष पाठ सीखने का प्रयास किया।

- श्री राम नवमी 21 अप्रैल, 2021

वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर

महादेव के अंशावतार भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी की जयंती हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में विधि विधान से संपन्न हुई। इस अवसर पर श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी ने उन्हें भक्त शिरोमणि बताया और भक्तों को उनसे सीख लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे धर्मग्रंथों में हनुमान जी और श्री लक्ष्मण जी से बढ़कर सेवक कोई और नहीं बताया गया है। उसमें भी लक्ष्मण जी का भाई का नाता है, जबकि हनुमान जी का केवल भक्त का नाता है। इसलिए उन्हें श्रेष्ठ माना गया है।

- श्री हनुमान जयंती 27 अप्रैल, 2021

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:51 AM Page 92

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:51 AM Page 93

चतुर्दशम् ब्रह्मोत्सव

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम का पांच दिवसीय 14वां श्री ब्रह्मोत्सव श्री रामानुज परंपरा अनुसार मनाया गया। समस्त विधि विधान दिव्यधाम के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज द्वारा संपन्न करवाए गए। इस अवसर पर उन्होंने समस्त अर्चकों, वेद छात्रों एवं सेवादारों को आश्रम की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहयोग की बात कही। उन्होंने कहा कि आपके व्यक्तित्व से दिव्यधाम का आंकलन किया जाता है। इसलिए आप इसका स्तर ऊंचा रखने का प्रयास करें।

चतुर्दशम् ब्रह्मोत्सव - 18 से 22 मई, 2021

Sudershanalok_2022_Pages_74-95_sudershanalok 2021 13-Mar-22 11:51 AM Page 94

यतिराज तुम्हारी जय हो, जय हो

श्री रामानुज संप्रदाय के महान संत भाष्यकार रामानुज स्वामी जी की जयंती श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में विशेष व्यवस्था के साथ मनाई गई। इस अवसर पर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बताया कि पूर्व में श्री संप्रदाय और तदनुसार आचार्य संप्रदाय के नाम से विख्यात हमारी परंपरा के वैभव को भाष्यकार भगवान श्री रामानुज स्वामी जी ने इतना बढ़ाया कि संप्रदाय को उनके ही नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने श्रीभाष्य की टीका कर मानव जाति पर महान उपकार किया है। जिससे हम उऋण नहीं हो सकते हैं। इस अवसर पर भाष्यकार स्वामी जी के उत्सव विग्रह की शोभायात्रा भी निकाली गई।

- श्री रामानुज जयंती 18 अप्रैल, 2021

भक्तों के पालनहार श्री नृसिंह भगवान

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में भगवान नारायण के नृसिंह अवतार के अवतरण दिवस का विशेष आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री नृसिंह भगवान के दिव्य विग्रहों का पूजन परमपूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने किया। श्री गुरु महाराज जी ने लोककल्याण के लिए भगवान श्रीनृसिंह जी से प्रार्थना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भगवान का यह अवतार सबसे कम अवधि का हुआ है, जो केवल अपने भक्त की प्राण रक्षा एवं उसके विश्वास को स्थापित करने के लिए हुआ है। हमें भगवान पर अंत समय तक भी विश्वास रखना चाहिए। वह कभी भी अपने भक्त को निराश नहीं करते हैं।

- श्री नृसिंह जयंती 25 मई, 2021

बाबा, आपकी कृपा हम पर बनी रहे

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद की स्थापना करने वाले महान तपस्वी संत एवं श्री रामानुज परंपरा में जगदगुरु प्रतिष्ठित वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि कोराना प्रोटोकाल के कारण बड़ी सादगी के साथ मनाई गई। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैकुंठवासी गुरु महाराज के विग्रह का पूजन किया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि, 22 मई, 2021

जीवन के हर पल में गुरुदेव सहारा तेरा है

वर्ष 1989 में फरीदाबाद से होकर गुजरने वाली अरावली पर्वतमाला पर श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना करने वाले वैकुंठवासी गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की जयंती एवं आश्रम स्थापना दिवस हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आनंदोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बाबा के स्मृति स्थल एवं दिव्यधाम में स्थापित श्रीविग्रह का विशेष उपचार से अभिषेक पूजन अर्चन किया गया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की जयंती (आनंदोत्सव), 27 मई, 2021

Sudershanalok_2022_Pages_96-120_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:03 PM Page 101

सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय

अध्यात्म के क्षेत्र में गुरु पूर्णिमा का स्थान सभी पर्वों से ऊपर माना जाता है। इस वर्ष यह पर्व 24 जुलाई को था। इस अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम को विशेष रूप से सजाया गया था। इस अवसर पर भक्तों ने अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का पूजन किया और उनसे अपनी भूलों के लिए क्षमा प्रार्थना की। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज ने सभी को अपने जीवन में लक्ष्य बनाने और गुरु की सीख को अपने जीवन में स्वीकार करने के लिए संदेश दिया।

श्री गुरु पूर्णिमा, 24 जुलाई, 2021

Sudershanalok_2022_Pages_96-120_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:03 PM Page 102

करुणामयी मां की द्वितीय पुण्यतिथि

वैकुंठवासी गुरु महाराज जी की भार्या, आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जी की माता जी एवं हम सभी गुरु भक्तों की गुरुमाता श्रीमती अशरफी देवी जी की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर श्री सिद्धदाता आश्रम के सत्संग भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी एवं अन्य ने श्रीगुरुमाता जी के बारे में अपने विचार रखे और श्रद्धासुमन अर्पित किए।

07 अगस्त, 2021

गुरुगीता प्रदान करने वाले शिवजी की याद

माता पार्वती के माध्यम से संसार को गुरु के प्रति आचार विचार बताने वाले महादेव शिव के नीलकंठ बनने की जयंती श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्थित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम में धूमधाम के साथ मनाई गई। श्रावण शिवरात्रि के इस पर्व पर आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैदिक रीति से भगवान शिव के मूर्त रुप का महाभिषेक किया। उन्होंने महादेव के श्रीविग्रह के समक्ष संसार के कल्याण के लिए प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि सभी को भगवान भोले जैसा भोलापन रखना चाहिए लेकिन संसार की रक्षा के लिए नीलकंठ बनने (त्याग) के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

श्रावण शिवरात्रि, 06 अगस्त, 2021

श्रीकृष्ण
महोत्सव

आनन्दकन्द भगवान की जय

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में हमेशा ही विशिष्ट रहा है। इस बार भी सुंदर रोशनी में नहाया दिव्यधाम एवं आश्रम अद्भुत लग रहा था। इस अवसर पर आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण की वैदिक विधि निभाई और भक्तों को अपना संदेश दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्त यहां पहुंचे और ऑनलाइन माध्यमों से भी लाखों लोगों ने प्रसारण देखा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव, 30 अगस्त, 2021

71वें
गणतंत्र दिवस

सत्य विजय का पर्व एवं आद्या शक्ति का गुणगान

श्री सिद्धदाता आश्रम में आद्या शक्ति की आराधना का पर्व नवरात्र परंपरा अनुसार मनाया गया। यहां नवरात्र के दिनों में विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया जिसमें सभी दिन सविधि पूजन का आयोजन किया गया और दशहरा अर्थात् विजयादशमी के पर्व के उपलक्ष्य में परमपूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने हवन किया।

दशहरा पर्व, 14 अक्टूबर, 2021

कार्तिक मास में दान

वैसे तो दान का महत्व हर क्षण होता है लेकिन कहा जाता है कि कार्तिक मास में किए दान का सर्वाधिक फल होता है। कार्तिक मास में श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्षों से दान की परंपरा को निभाते हुए अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने अर्चकों एवं सेवादारों मिठाई, वस्त्र प्रदान किए।

अद्वितीय दीपोत्सव

हम दीपावली हर वर्ष मनाते हैं और बड़े उल्लास के साथ इसका आयोजन करते हैं। विशेष रूप से प्रकाश का पर्व दीपावली हजारों दीपकों एवं झड़ियों के साथ मनाया जाता है। लेकिन इस वर्ष का प्रकाश अद्वितीय रहा। पूरे आश्रम परिसर को हजारों दीपों की दीपमालिका से सजाया गया। जिससे यहां की छटा देखते ही बनती थी। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज ने लोक कल्याण के लिए वैदिक परम्परा अनुसार देवी माँ श्री लक्ष्मी व श्री गणेश भगवान् का सविधि पूजन किया। इस सजावट का लाखों भक्तों ने सोशल मीडिया माध्यमों के जरिए लाइव आनन्द प्राप्त किया।

दीपावली महोत्सव, 04 नवंबर, 2021

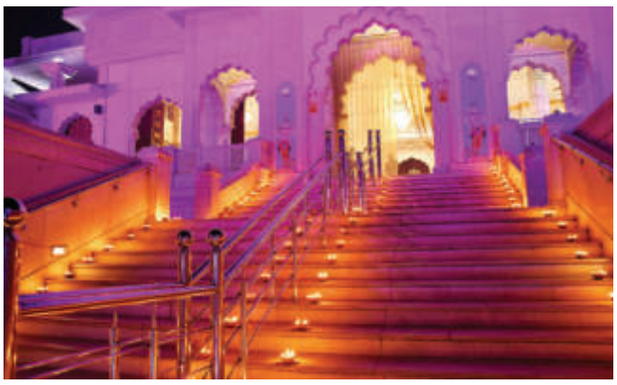

Sudershanalok_2022_Pages_96-120_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:03 PM Page 114

परम कृपालु गोवर्धन महाराज की जय

भगवान श्रीकृष्ण ने मद में डूबे देवराज इन्द्र का अभिमान तोड़कर गोप गोपियों की रक्षा की और प्रकृति का महत्व जनमानस को बताया। इसी अवसर को श्री गोवर्धन पूजन के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में गोवर्धन पूजा का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीगुरु महाराज जी ने विधिवत पूजा अर्चना की और उपस्थित श्रद्धालओं को आशीर्वाद एवं प्रसाद किया। उन्होंने श्री गोवर्धन महाराज की पूजा के उपरांत परिक्रमा की। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए और वृक्ष अवश्य ही लगाने चाहिए।

श्री गोवर्धन पूजन, 05 नवंबर, 2021

पावने सुरभि श्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोस्तुते

इस वर्ष भी श्री गोपाष्टमी का पर्व श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित श्री नारायण गौशाला में पूरी विधि विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हमारे अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने गौवंश का पूजन किया और उन्हें हरा चारा, गुड़ आदि प्रदान किया। श्री गुरु महाराज ने उपस्थित भक्तों एवं सेवादारों को गौ सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गौ ही ऐसा प्राणी है जिससे प्राप्त हर चीज हमारे जीवन में उपयोगी है। हमें यथासम्भव गौ पालन, गौ सेवा करनी चाहिए।

गोपाष्टमी पर्व, 11 नवंबर, 2021

संस्कृत और संस्कृति की
रक्षा से ही
विश्व की रक्षा संभव है।

श्री लक्ष्मी-नारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
गीता जयंती महोत्सव 2021

गीता जयंती : सिद्धदाता आश्रम ने की जोरदार भागीदारी

जिला प्रशासन द्वारा आयोजित गीता जयंती महोत्सव की शुरुआत हवन के साथ हुई। इस हवन को स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के आचार्यों एवं वेदपाठियों द्वारा संपन्न कराया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर एवं हरियाणा के कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा एवं अन्य अतिथियों एवं अधिकारियों का आश्रम के प्रदर्शनी स्टॉल पर भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन श्री सिद्धदाता आश्रम की झांकी में श्रीकृष्ण के बाल रूपों को प्रदर्शित किया गया था। जिसमें माखन मिश्री खाते हुए, माँ यशोदा द्वारा गुस्से में ओखली से बंधे श्रीकृष्ण, सुदामा श्रीकृष्ण की भेंट आदि दृश्य दिखाए गए थे। इस झांकी की सभी ने बहुत प्रशंसा की। महोत्सव में मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती सीमा त्रिखा से सम्मानित होने के बाद आश्रम पहुंचे जत्थे को श्री गुरु महाराज जी ने भी आशीर्वाद दिया और स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के आचार्यों एवं वेदपाठियों के साथ गीता के श्लोकों का सस्वर पाठ करते हुए आश्रम की परिक्रमा की।

गीता जयंती महोत्सव, 12 से 14 दिसंबर, 2021

Sudershanalok_2022_Pages_96-120_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:03 PM Page 118

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम-2022

01 - 01 - 2022	ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का जन्मदिवस एवं ग्रेगेरियन नववर्ष उत्सव
05 - 02 - 2022	बसंत पंचमी
01 - 03 - 2022	महाशिवरात्रि
17 - 03 - 2022	होली महोत्सव
18 - 03 - 2022	होली रंगवाली
10 - 04 - 2022	श्रीरामनवमी
16 - 04 - 2022	श्रीहनुमान जयंती
06 - 05 - 2022	स्वामी श्री रामानुजाचार्य जयंती
07 - 05 - 2022	ब्रह्मोत्सव रथयात्रा
14 - 05 - 2022	श्रीनृसिंह जयंती
22 - 05 - 2022	वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज जी की पुण्यतिथि
27 - 05 - 2022	वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज जी की जयंती एवं आश्रम का स्थापना दिवस (आनंदोत्सव)
13 - 07 - 2022	गुरु पूर्णिमा
26 - 07 - 2022	श्रावण शिवरात्रि
12 - 08 - 2022	रक्षाबंधन
19 - 08 - 2022	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
26 - 09 - 2022	शारदीय नवरात्र प्रारभ
04 - 10 - 2022	आश्रम का दशहरा पर्व
24 - 10 - 2022	दीपावली
26 - 10 - 2022	अन्नकूट गोवर्धन पूजा
01 - 11 - 2022	गोपाष्टमी पर्व

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

श्री सिद्धदाता आश्रम

समय सारणी

1 नवम्बर से 28 फरवरी शीत काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 5:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	5:15 से 5:45 बजे	आराधना
सायं	5:45 से 6:10 बजे	अर्चना
सायं	6:10 से 6:30 बजे	राजभोग
रात्रि	6:30 से 8:15 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:15 से 8:30 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	8:30	विश्राम

2 मार्च से 31 अक्टूबर ग्रीष्म काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 6:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	6:15 से 6:45 बजे	आराधना
सायं	6:45 से 7:10 बजे	अर्चना
सायं	7:10 से 7:30 बजे	राजभोग
रात्रि	7:30 से 8:45 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:45 से 9:00 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	9:00	विश्राम

आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियां

- स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय
- नारायण गौशाला
- पुस्कालय
- अतिथि गृह
- सत्संग भवन
- यज्ञशाला
- औषधालय
- भोजनालय

आश्रम में निम्न लिखित कार्य वर्जित हैं

- धूम्रपान करना
- मदिरापान करना
- अस्त्र/शस्त्र लाना
- चमड़े की वस्तु लाना
- जूते व चप्पल लाना
- मन्दिर में फोटो खींचना

प्रातः 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

नोट : मन्दिर खुलने के समय ही प्रवेश की अनुमति है

विशेष : अपने वाहन व सामान की सुरक्षा स्वयं करें।

Sudershanalok_2022_Pages_96-120_sudershanalok 2021 13-Mar-22 12:03 PM Page 120